विश्व वाणी
समर्पण
Vol. 37 - Issue 3 | March 2024
Rs. 10/-

सुसमाचार
कहाँ और कब?

उसके पुत्र
यीशु का लहू
हमें सब पापों से
शुद्ध करता है
1 यूहन्ना 1:7

March 2024

विश्ववाणी समर्पण

उत्तर भारत कार्यालयः
एफ–11, प्रथम मंजिल, विश्वकर्मा कॉलोनी
एम.बी रोड, नई दिल्ली – 110044
फोनः 0129–4838657
ई–मेलः vvnorthindia@vishwavani.org

प्रकाशन कार्यालयः
1.10.28/247, आनंदपुरम, कुशाईगुड़ा
ई.सी.आई.एल पी.ओ., हैदराबाद – 500062
फोनः 040–27125557,
ई–मेलः samarpan@vishwavani.org

विश्ववाणी समर्पण पत्रिका हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, मलयालम, कन्नड़, तेलुगू, मराठी, गुजराती, उड़िया, बंगला, कोक बोरोक व सौरा भाषा में प्रकाशित होती है। वार्षिक शुल्क 100 रू. है।

विषय सूची

02 मनन के विषय
03 कार्यकारी निर्देशक...
07 आज ही दिन ही दिन में...
10 विशेष आकर्षण
16 नेटवर्क चेयरमैन...
20 बाइबल अध्ययन
22 प्रेयर नेटवर्क निर्देशक...
26 कार्यक्षेत्र के समाचार

मनन के विषय

- सुसमाचार सेवकाई में
  शांति के पात्र की पहचान करना अत्यधिक
  आवश्यक है यदि हम इसे पहचान सकें, तब
  कटनी 30,60,100 गुणा होगी!

- जब हम ऐसे स्थानों की यात्रा करते हैं जहाँ तक
  नहीं पहुँचा जा सका है
  तो फिर यह एक प्रभु के दासों की यात्रा है
  जब हम उन लोगों के साथ यात्रा करते हैं जिन्हें
  हम जानते हैं, तो फिर यह एक छुट्टियों की यात्रा है!
  पहली यात्रा के दौरान कलीसियाएं बनाई जाएंगी
  दूसरी यात्रा के दौरान कलीसियाएं विभाजित हो
  सकती है। पहले, यह दुर्गम क्षेत्र हैं
  बाद में, यह कुछ लोगों की सीमा/पहुँच में है!
  पहले में, पवित्र आत्मा वहाँ है, बाद में, शरीर वहाँ है!

- कार्यकर्ता की यात्रा स्वर्गीय नियंत्रण में है!
  यदि हम अपना मार्ग बदलते हैं
  हम सिंहों के अधीन हो जायेंगे!
  (1राजा अध्याय 13 पढ़ें)

- हम कहाँ घोषणा करें? जहाँ फिलिप्पुस की तरह
  पवित्र आत्मा हमें ले जाएगा, हम कब तक घोषणा करें?
  फिलिप्पुस की तरह
  जब तक पवित्र आत्मा हमें ले चलेगा!

- नीनवे जब तक यह पूर्व में है
  और यदि हम उत्तर की ओर मुड़ें और बढ़ें
  तो कार्यकर्ता नींद को महसूस करता है।
  किन्तु जब वह जागता है तो उसे मछली का पेट
  दिखाई दिया!

- कलीसिया में जब सुसमाचार का कार्य बढ़ता है,
  सीमाएँ बढ़ेंगी, यदि इसके विपरीत हों, समस्याएं बढ़ेंगी।

- यदि लोग अंधकार में हैं
  तो उन्हें उजियाला में आने की आवश्यकता है
  फिर कार्यकर्ता का चेहरा, अवश्य ही चमकना
  चाहिए!

- जब तक परमेश्वर, वचन की घोषणा का द्वार
  खोलता है
  हमें अपने घुटनों पर रहने की आवश्यकता है
  एक बार द्वार खुलने के बाद
  हमारे पैर हिरण के पैर होंगे!

- वे जो बुलाये हुए हैं
  जब वे उस स्थान पर होंगे जहाँ उन्हें बुलाया गया है?
  वहाँ स्वर्गीय आग होगी,
  इसके विपरीत वहाँ भस्म करने वाली आग होगी!

कार्यकारी निर्देशक की ओर से...

मसीह में प्रिय सेवा सहयोगीगण,

आपको उस प्रभु यीशु मसीह के नाम पर मसीही नमस्कार, जिसे हमारे अपराधों के लिए घायल किया गया, हमारे अधर्मों के लिए कुचला गया, और प्रताड़ित किया गया ताकि हमें शांति मिल सकें।

अज्ञानता/अवहेलना का समयः

पौलुस अरियुपगुस की सभा में सुसमाचार बाँट रहा था। बहुतों ने सुसमाचार पर विश्वास नही किया और इसलिए उसका मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। इस घटना के बारे में हम प्रेरितों के काम 17:16–34 में पढ़ते हैं। परन्तु कुछ लोगों ने उन वचनों पर विश्वास किया जो उन्होंने सुने थे और स्वर्ग के नागरिक बन गये। पौलुस यह स्पष्ट करता है कि हम अज्ञानता में थे, और अब हम पश्चाताप् के समय में पहुँच गए हैं। वह यह भी बताता है कि यदि हम पश्चातापी न हों तो परमेश्वर निश्चित रूप से हमारा न्याय करेगा। हम पद 27 में देखते हैं कि परमेश्वर हमें उसे प्रभु के रूप में स्वीकार करने का अवसर देता है। यीशु उन लोगों के बहुत निकट रहता है जो उनके साथ जुड़े हुए हैं। वह हमारी पुकार को सुनकर उत्तर देगा और हमे बचाएगा! (रोमियों 10:9,10, प्रेरितों के काम 16:31)।

अनुग्रह का समयः

हम परमेश्वर द्वारा दिए गए अनुग्रह के समय में जी रहे हैं! हमें अपने पापों से छुटकारा पाने के लिए सुसमाचार पर विश्वास करना सिखाया गया है। हमें चेतावनी दी गई है कि हम अपने हृदयों को कठोर न करें और यीशु के चरणों पर बने रहें। जब हम यीशु पर विश्वास करते हैं और कार्यों से पश्चाताप् करते हैं तो हमारे पाप क्षमा किए जाते हैं। हमारे पास यीशु की संतान होने और स्वर्ग की आशीषों का आन्नद लेने का अधिकार है। नबी योना के माध्यम से नीनवे के लोगों के लिए अनुग्रह की अवधि बढ़ा दी गई थी, उसने कहा कि पश्चाताप् करने के लिए उनके पास चालीस दिन और थे। वहाँ पर एक महान जागृति आयी और पूरा शहर विनाश से बच गया! इसी तरह, यदि हम परमेश्वर की आवाज सुनते हैं और पश्चाताप् करते हैं तो हमें नया जीवन मिलता है (यिर्म.5:1, 31:34, 33:8, 50:20)।

पुनः स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने का समयः

जब हम वह जीवन जीने लगते हैं तब यशायाह 58:6–14 के अनुसार जो परमेश्वर चाहता है कि "यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और अकाल के समय तुझे तष्त और तेरी हड्डियों को हरी–भरी करेगा, और तू सींची हुई बारी और सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता"। यह प्रतिज्ञा हमारे लिए होगी कि "और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा"। (यशायाह 58:8)

यिर्मयाह 33:6–16 कहता है, कि हमारा व्यक्तित्व जीवन परिवर्तित हो जाएगा। हमारे पाप उदारता पूर्वक क्षमा कर दिये गये हैं, और हम शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ हो गए हैं! आइए, हम याद रखें कि हमारे पास वह शांति हैं जिसे कोई हमसे छीन नहीं सकता। हम बहुतायत से आशीषित होंगे और परमेश्वर की महिमा के लिए जीवित रहेंगे।

एक मसीही के रूप में मैं कौन हूँ? मेरे उत्तर दायित्व क्या हैं?

हम निम्नलिखित तरीकों से एक सच्चे मसीही की पहचान कर सकते हैं?

नया जन्मः

रोमियों 3:23 के अनुसार, इसलिए कि सब ने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गए हैं। इस प्रकार पाप की मजदूरी जो मृत्यु है, उसका निर्धारण हुआ (रोमियों 6:23)। यीशु मसीह ने क्रूस पर स्वंय का बलिदान दिया (1यूहन्ना 1:7–9) और मानव जाति को पापों से मुक्ति दिलाने के लिए अपने बहुमूल्य लहू को बहाया (इब्रा.9:11–15)। मसीह में एक व्यक्ति को जो नया जीवन मिलता है वह जीवन सब पुरानी बातों को समाप्त कर देगा और सब कुछ नया कर देगा (2कुरि.5:17)। अतः व्यक्ति का नया जन्म एक संकेत है!

फलवंत आत्मिक जीवनः

मसीह में हमें जो नया जीवन प्राप्त होता है वह तो बस एक प्रारम्भ है। हमसे विभिन्न स्तरों पर उन्नति करने और अधिक फल देने की अपेक्षा की जाती है।

गलातियों 5:22,23 कहता है, "परन्तु आत्मा का फल, प्रेम, आन्नद, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास नम्रता और संयम है"। ये सभी फल हमारे अपने जीवन में अवश्य दिखाई देने चाहिए। एक मसीही व्यक्ति को नियमित रूप से बाइबल पढ़नी चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। क्योंकि यदि आप में यह गुण बढ़ती मात्रा में हैं, तो वे आपको हमारे प्रभु यीशु मसीह के ज्ञान में प्रभाव रहित और फल रहित होने से बचाएंगे (2पत.1:5–8)।

आत्माओं की कटनीः

जो बुद्धिमान है वह प्राणों को बचाता है। जो मार डाले जाने के घसीटे जाते हैं उनको छुड़ा, और जो घात किए जाने हैं उन्हें मत पकड़ा। यदि तू कहे कि देख "मैं इसे जानता न था, तो क्या मनों को जाँचने वाला इसे नहीं समझता? क्या तेरे प्राणों का रक्षक इसे नहीं जानता, और क्या हर एक मनुश्य के काम का फल उसे न देगा? उन पर जो शंका में हैं, दया करो (नीति. 11:30, 24:11,12, यहूदा 1:22)

यदि मैं सुसमाचार सुनाऊँ, तो मेरे लिए कुछ घमण्ड की बात नही, क्योंकि यह मेरे लिए अवश्य है। यदि मैं सुसमाचार का प्रचार न करूँ, तो मुझ पर हाय। क्योंकि यदि अपनी इच्छा से यह करता हूँ तो मजदूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता तौभी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है (1कुरि.9:16,17)।

जरूरतमदों/आवश्यकता में पड़े लोगों को देंः

हमारे चारों ओर भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं से पूर्ण लोग हैं। जहाँ हम नहीं पहुँच सकते वहाँ ये बड़ी संख्या में भरे हुए हैं। आप अपने आस–पास के लोगों की सहायता कर सकते हैं और उन्हें ऊपर उठा सकते हैं। जो दूर हैं उनके लिए आगे बढ़े और अपनी मुट्ठियों को खोलें। तब आपके लिए स्वर्ग में धन होगा। पृथ्वी पर और आने वाले जीवन में मसीह में महान आशीशें होंगी।

मसीही जीवन, गवाही के साथः

भले ही हम अपना मूँह खोलने और यीशु को स्वीकार करने में संकोच करते हैं, किन्तु मसीह आपके जीवन से प्रतिबिंबिब होनी चाहिए और आपको प्रमाणित करना चाहिए कि यीशु ही सच्चा परमेश्वर है। जब हम इन अच्छे मसीही गुणों को व्यक्ति, परिवार और समाज में प्रतिबिंबित करेंग करेंगे तो अनेक लोग यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करेंगे

और उसके गवाह बनेंगे। हम पाप के अंधकार में लोगों के लिए प्रकाश है! हम लोगों को पाप से बचाने वाले नमक हैं! हाँ, यीशु जीवित परमेश्वर है, और हम उसके गवाह हैं (प्रेरितों 26:15–20)। आमीन।

संस्था की गतिविधियाँ:

राष्ट्रीय तमिल विश्वासियों की सभा:

तमिलनाडु के 600 विश्वासी और सेवकों का पहली बार 14–16 जनवरी 2024 को हैदराबाद के "एमिल अन्नन ध्यानानिलायम" में एक साथ एकत्र हुए। हमारे पास एक साथ मिलकर प्रार्थना करने का सुनहरा अवसर रहा और हमें परमेश्वर के कार्यों की व्रीवता को बढ़ाने का अवसर मिला। संदेश "यहोवा भला है और अपने शरणागतों की सुधि रखता है"। इसी शीर्षक के अनुसार वचन प्रचार किया गया है (नहूम 1:7। हम उन सभी को हृदय से धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस सभा का उत्कृष्ट आयोजन किया!

मणिपुर राहत कार्य

हमें 17 –23 जनवरी तक मणिपुर में अपनी सेवकाई में भ्रमण करने का अवसर मिला। हमने सुसमाचार सेवकों से मुलाकात की और उन्हें प्रोत्साहित किया। हमने दंगे के दौरान क्षतिग्रस्त हुए आराधना भवनों का भ्रमण किया और विश्वासियों को सांत्वना दी। हमने उन परिवारों के लिए राहत सामग्री वितरित की जो बहुत जरूरत में हैं। हमने बैपटिस्ट कलीसिया द्वारा आयोजित सेवाओं में भाग लिया और परमेश्वर की आराधना की। हमने उन कलीसियाओं में विश्ववाणी सेवाओं के दर्शन को उनके साथ बाँटा! सेवकगण प्रभु में सुरक्षित हैं और सेवा में आगे बढ़ रहे हैं। अपनी प्रार्थनाओं में उन्हें स्मरण रखना न भूलें। राहत कार्य जारी रखने के लिए हमें आपके वित्तिय सहयोग की आवश्यकता है। कृपया क्षतिग्रस्त आराधना भवनों के पुनः निर्माण के लिए निरंतर प्रार्थना करें।

दर्शन एवं कार्यनीति सभा

हमारी संस्था के दर्शन को हमारे साथ उपस्थित प्रतिनिधियों, सेवा सहयोगियों, कलीसियाओं के अगुवों के साथ बाँटा गया। यह हम सबके लिए एक महान आशीष रही। मैं उन सभी को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इसके लिए प्रार्थना की और काम किया। कृप्या 1400 सुसमाचार सेवकों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रार्थना करें जो इस वर्ष 7000 गाँवों में सुसमाचार बाँटने/प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों। नये वित्तिय वर्ष के लिए योजना सभाएं अप्रैल 2024 के पहले सप्ताह के दौरान प्रत्येक राज्य में आयोजित की जाएंगी। कृप्या प्रार्थना में हमारा सहयोग करते रहें।

उत्तर भारत में सेवकाई के अगुवों का प्रशिक्षण:

28 से 31 जनवरी तक भोपाल, मध्य प्रदेश में आयोजित

प्रशिक्षण में उत्तर भारत के 105 विश्ववाणी अगुवों ने भाग लिया और बहुत आशीषों को प्राप्त किया। हमें रविवार 28 जनवरी को कई कलीसियाओं में परमेश्वर के वचन और दर्शन को बांटने और प्रचार करने का अवसर मिला। हमें अवसर देने के लिए हम सभी अगुवों और पासवानों को धन्यवाद देते हैं। केवल उत्तर भारत के ही 46000 गाँवों में सुसमाचार प्रचार करना हमारा लक्ष्य है। चूँकि हम इन दिनों विभिन्न समस्याओं का सामना कर रहे हैं, कृप्या हमें अपनी प्रार्थनाओं में अवश्य उठाये रखें।

एज्रा शिविर और प्रशिक्षण कक्षाएं

25 नए एज्रा 5 जनवरी से आन्ध्र प्रदेष में प्रशिक्षण ले रहें हैं और 20 नए एज्रा 3 फरवरी से गुजरात में अपना प्रशिक्षण आरम्भ करेंगे। नये सेवकों का चुनाव करने के लिए एज्रा शिविर उत्तर और पूर्वी भारत में अब भी जारी हैं। कृप्या एक परिवार या समूह के रूप में प्रतिमाह 4000 रूपये दान देने के द्वारा एक नये गाँव का सहयोग करने के लिए आगे आएं। आप हमसे एक बचत बॉक्स भी प्राप्त करत सकते हैं और हर दिन 10 रूपये सहयोग दान डालकर हमारा सहयोग कर सकते हैं। प्रभु आपको भरपूर आशीष दें।

सेवकाई महोत्सव 2024

सेवकाई महोत्सव 4 फरवरी से 3 मार्च तक कार्यक्षेत्रों में मनाया जाता है ताकि प्रथम पीढ़ी के विश्वासी सुसमाचार के काम में शामिल हों और सेवकाई के लिए आन्नद पूर्वक अपना सहयोग दें। इस महोत्सव के माध्यम से एकत्र किए गए विशेष दान का उपयोग उन सेवकों के लिए किया जाएगा जो सुसमाचार प्रचार करने में शामिल हैं। यदि प्रभु आपको इस अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करते हैं, तो आप अपने निकटतम क्षेत्र के सुसमाचार सेवक या प्रतिनिधि से संपर्क कर सकते हैं।

31 मार्च को वित्तिय वर्ष का समापनः

इस वित्तिय वर्ष को 31 मार्च तक पूरा करना है। हम सभी कार्यों को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं, जिनकी हमने योजना बनायी थी। हमारा विनम्र अनुरोध है कि आप अपने सभी बचत बॉक्स दान, गाँव गोद लेने का दान और विशेश दान 31 मार्च से पहले अवष्य ही भेज दें। यदि आपका पता बदल गया है, तो कृप्या हमें तुंरत सूचित करें। इसके द्वारा आप तक अवश्य ही समर्पण पत्रिका भेजना, सेवकाई सम्बधित विवरण भेजना और व्यक्तिगत रूप से आकर आप के लिए प्रार्थना करना हमारे लिए आसान होगा। प्रभु आपको बहुतायत की आशीष दें।

भोर को अपना बीज बो, और सांझ को भी अपना हाथ न रोक"
क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन सफल होगा, यह वा वह,
या दोनों के दोनों अच्छे निकलेंगे। (सभो.11:6)

12.02.2024 मसीह में आपका भाई
चैन्नई *रेव्ह. डॉ.डब्ल्यू विल्सन ग्नानाकुमार*

आज ही दिन ही दिन में सुसमाचार में बढ़ते चले जायें

प्रियों,

आपको मेरा मसीह नमस्कार!

मार्च माह के इस अंक **सुसमाचार कहाँ और कब?** के साथ आप के पास पहुँच रहे हैं। आशा करते हैं, इसके जरिये प्रभु आपको आशीषित करेंगे, तथा सुसमाचार की सेवा में और अधिक प्रोत्साहित करेंगे, जीहाँ प्रियों यह वह उत्तम भाग है कि इसको प्राप्त करने वाला शांत नहीं बैठ सकता, या इसे छोड़कर और किसी दूसरे कार्य में नहीं लग सकता, पौलूस प्रेरित स्वयं को सुमाचार का कर्जदार कहता है, (रोमियों 1:14) क्योंकि हमारे प्रभु ने इसके लिये बहुमूल्य कीमत चुकाई, तथा हमारे को सेंतमेंत में अनुग्रह के धन के रूप में यह उत्तम भाग जो स्वयं हमारे यीशु मसीह के रूप में दान स्वरूप दे दिया, अब चुंकि हमने यह विश्वास का जीवन प्राप्त किया है, तो क्या स्वयं को सुसमाचार का कर्जदार मानते हैं? पौलूस प्रेरित अपने विषय में लिखता है मेरे लिये जीवित रहना मसीह अन्यथा मर जाना लाभ है। परमेश्वर से ऊँची बुलाहट पाने के बाद सुसमाचार का कार्य उसके लिये एकमात्र प्रथम कार्य बन गया, क्यों न हम भी सुसमाचार की सेवा में अपना जीवन दे दें, एक ही जीवन है, तथा इस जीवन में हमें यह अनुग्रह का समय प्राप्त हुआ है, अब आगे विचार करते हैं कि सुमाचार कार्य क्या है? सुसमाचार कार्य एक प्रकार से बोना है, बाइबल कहती है इसे सुबह भी बो और शाम को भी बो, नहीं मालूम कौन सा उग कर फल लाए, (सभो. 11:6) क्योंकि जब किसान बोता है, तो जरूरी नहीं कि सौ प्रतिशत अच्छी भूमि में गिरे, कुछ झाड़ियों में गिर जाते हैं, कुछ पथरीली जमीन पर व कुछ मार्ग में, जिन्हें चिड़ियाँ चुग लेती हैं, हाँ प्रियों, किन्तु हमें बोने के कार्य को रोकना नहीं है, बाइबल कहती है, जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे, एक बच्चे के जीवन में माँ बाप जो बोते हैं, वह बड़ा होकर उसी रूप में ढलता रहता है, ठीक उसी तरह कलीसिया में जिस प्रकार बोया जाता है, वह कलीसिया उसी अनुरूप पनपती है, अगर आपस में ढाह, मेल मिलाप या झगड़ा है तो इस से यह प्रमाणित होता है कि बोने में कसर रह गई है, यहां पर यह ध्यान

रखें जैसा हमारे प्रभु ने बोया वैसा ही हमें भी बोना है। इसलिये कटनी का दिन निकट है, तो हमें जरूर बोने पर ध्यान देना चाहिए।

अब अगला विचार आ रहा है कि हमें कहाँ कहाँ यह वचन बोना है? जरूर हमें इस विषय पर सोचना चाहिए, जीहाँ, हमारी कलीसियाओं में व परिवारों में इसके लिये बोझ के साथ प्रार्थना करते हुए सुसमाचार की इस बहुमूल्य सेवा को बढ़कर करते रहना है। यदि हम ढीले न हो तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे। प्रियों तो कहाँ हमें यह सुसमाचार बाँटना है? या आपका सेवाक्षेत्र क्या क्या और कहाँ हो सकता है " प्रभु यीशु ने कहा सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों सुसमाचार प्रचार करो "(मरकुस 16:9)। प्रियों आप सब जगह जा नहीं सकते किन्तु अपने घूटने में प्रार्थना के द्वारा आत्मा में जाकर प्रभु से हम माँगे, विभिन्न जाति भाषा व स्वरूप के लोगो को कि वे उद्धार पाएँ, देश में सेवकों को प्रार्थनाओं में उठाने के जरिये, सुसमाचार के बोझ को उठायें, जहाँ मसीह का नाम नहीं लिया गया, वहाँ सेवकों को जो कि पूर्णकालीन सेवा में बुलाये गये हैं, उन्हें भेजें, आंताकिया की कलीसिया के समान यह मिशन की सेवा निरंतर आपके मण्डली से जारी रहे, जब अनेकों मंडलियों ने यह विश्वास का कार्य प्रारंभ किया तथा मिशनरियों को सुसमाचार कार्य में भेजा गया, जिसके फलस्वरूप प्रभु का कार्य बढ़ता गया, हमें अपने आस–पड़ोस व परिवार से प्रारंभ करके काफी आगे तक सुसमाचार को लेकर जाना है, प्रभु यीशु मसीह ने जहाँ भीड़ की भीड़ को उपदेश दिये वहीं प्रभु एक एक आत्मा को भी ढूढ़ता था, जैसे कि धनवान जक्कई को प्रभु ने एक बड़ी भीड़ से आवाज देकर बुलाया, एक समारी महिला को प्रभु एकांत में मिले क्योंकि वह पापिन थी, तथा प्रभु से मिलने के उपरांत वह तुरन्त बदल गयी और जीवन की नदियाँ अर्थात् प्रभु यीशु का सुसमाचार उसके जीवन से बहने लगा।

अब हमें यह भी देखना चाहिए कि कब कब सुसमाचार का कार्य किया जाएँ पवित्र आत्मा से फिलिप्पूस ने कहा निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले (प्रेरितों 8:29–30) तथा जो रथ में बैठा था, वह बाइबल को पढ़ रहा था किन्तु उसे समझ नहीं पा रहा था, हाँ प्रियों ऐसे ही अनेकों खोजी आज भी हैं, जो शांति जीवन व उद्धार की खोज में हैं इसलिये हमें जब आत्मा प्रभु की सेवा में उभारे तो हमकों सुसमाचार बाँटना चाहिए, हो

सकता है आप यात्रा में हों, घर में या कार्य में एक नया जन्म पाया व्यक्ति वह है जो कि आत्मा की आवाज सुनता है, प्रभु हमारे मनों से बातें करें अर्थात् हम प्रभु की धीमी व मीठी आवाज को सुनें, फिर हम पढ़ते हैं कि रात्रि में चरवाहे के पास प्रभु का दूत एक सुसमाचार के साथ पहुँचा, यह बड़े आनन्द का सुसमाचार है, जो कि स्वर्गीय सुसमाचार है, जीहाँ प्रभु का कार्य 9 से 5 बजे वाला नहीं है बल्कि चौबीसों घंटें अर्थात् 24x7 है, इसीलिये पौलुस प्रेरित तीमुथियूस को लिखता है, कि समय व असमय तैयार रह, (2तिमु.2:4) जीहाँ प्रियों हमारा प्रभु हमकों आत्मा में सदैव जागृत व कार्यरत देखना चाहता है, आइए हम इस वर्ष एक नये समर्पण के साथ प्रभु के साथ संगति व निकटता में रहें, प्रियों आज हमारे लिये, अनुग्रह का द्वार खुला है, इसलिये हमें प्रभु से प्रार्थनापूर्वक इस स्वर्गीय सेवा में आत्मा व सच्चाई के साथ, जहाँ पर भी प्रभु उभारे और जब भी अगुवाई करें उसके सुसमाचार कार्य को पूर्ण करते जाना है।

नई दिल्ली — प्रभु में आपका भाई

20.02.2024 — आनन्द सिंह

टोल फ्री प्रार्थना केन्द्र की ओर से...

बहन लवली जाँन बताती हैं कि हम आँन लाईन लोन के प्रलोभन में आ गए थे, और हमें लोन भी मिल गया था, परन्तु हम ने कहीं ज्यादा वापस भी कर दिया, परन्तु हमें कम्पनी की तरफ से हमेशा फोन आता था कि आपका पैसा नहीं आ रहा है, और हम आप से कोर्ट में वसूल कर लेंगे, इस तरह से लवली जाँन के पति बहुत ही परेशान हो गये थे, क्योंकि उन्होंने सब पैसा आँन लाईन ही भर दिया था।

एक प्रातः मेरे पास इसी बहन का अचानक से फोन आया, तो बहन बहुत ही दुःख व उदासी मन के साथ अपनी उपरोक्त वेदना की बताई और मुझे प्रार्थना के लिये बोली, जब हम उनके साथ प्रार्थना कर रहे थे, परमेश्वर की दोहाई दी कि वह हस्तक्षेप करे, प्रार्थना के तुरन्त बाद उनके पति ने कमरे में आकर बताया कि कम्पनी से फोन आया था कि आपका कोई भी लोन की किस्त बाकी नहीं है और सारा लोन पूरा हो चूका है, परमेश्वर को महिमा मिले।

मार्च 2009 समर्पण के लिए भाई एमिल जेबासिंह द्वारा लिखा गया विशेष आकर्षण:

यीशु मसीह का सुसमाचार

कहाँ और कब प्रचार करें?

प्रियों, हम लूका 10:2 में पढ़ते हैं
"उसने उनसे कहा:
"पके खेत तो बहुत हैं, परन्तु मजदूर थोड़े हैं,
इसलिए
खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने
खेत में कटनी काटने के लिए मजदूर भेज दे।"
यीशु ने कहा पके खेत तो बहुत हैं,
कुछ समय पहले सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या मात्र दो करोड़ थी!
(आज केवल पंजाब की जनसंख्या 21/2 करोड़ है)
यह पद
जनसंख्या वृद्धि और सुसमाचार कार्य के बीच संबंध को इंगित करता है!

उप्पति 6:1 कहता है, "मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत बढ़ने लगे,
इसके द्वारा पता लगता है कि जनसंख्या के साथ पाप भी कैसे बढ़ता है!
उस समय जब मनुष्यों की संख्या बढ़ने लगी, तो शिश्य भी बढ़ने लगे।

प्रेरितों के काम 6:1 शुरू होता है, "उन दिनों जब चेलों की संख्या बढ़ने लगी।
बाइबल में कहा गया है कि लोगों की संख्या के साथ संसार में चेलों की संख्या में भी वृद्धि होगी!
बारह शिश्य (लूका 6:13), उसके बाद सत्तर शिष्य (लूका 10:1),
तत्पश्चात् 120 शिष्य (प्रेरित 1:15), फिर "जब शिष्य बढ़ गए" – हाँ,
अब शिष्यों की संख्या अनगिनत हो गई है!
लेकिन, यीशु ने कहा जनसंख्या की तुलना में कार्यकर्ता कम हैं।
वो ये नहीं कहते कि कमी है,
क्योंकि जिन्हें प्रचार करना चाहिए, यदि वे प्रचार न करें,
तो पत्थर चिल्ला उठेंगे, और घोषणा करेंगे! जो जानवर बोल नहीं सकते वे बोलेंगे और घोषणा करेंगे!
सुसमाचार कार्य में जनसंख्या अत्यंत महत्वपूर्ण है।
"खेत पक चुके हैं, पके खेत विश्व की जनसंख्या है!

इंग्लैंड से थॉमस माल्थस वर्ष 1803 ई. में
विश्व की जनसंख्या कैसे बढ़ती है
पर एक शोध लेख प्रकाशित किया।
डार्विन सहित सभी लोगों ने
उनके प्रकाशन को एक भविष्यवाणी माना।

यह बात ध्यान देने योग्य है

कि माल्थस इंग्लैंड के आराधना भवनों में पासवान और प्रोफेसर थे।
उस समय उनके द्वारा कही गयी बात जनसंख्या की वृद्धि और उसके परिणाम
आज भी सार्थक है!
पहले तो
माल्थस ने कहा विश्व की जनसंख्या नियंत्रण से बाहर हो जायेगी
और ज्यामितीय प्रगति लेंगे।

इसका अर्थ है,
माल्थस ने कहा कि विश्व की जनसंख्या नियंत्रण से बाहर हो जायेगी,
जैसे 1,2,4,8,16,32
और इसे नियंत्रित नहीं किया जा सका लेकिन यह छलांग लगाएगा।
दूसरी बात,
माल्थस ने कहा कि अंकगणितीय प्रगति में खाद्य उत्पादन में वृद्धि होगी।
इसका अर्थ है,
1,2,3,4,5,6 के रूप में खाद्य उत्पादन में वृद्धि होगी।
संसार में लोगों की संख्या बढ़ेगी,
लेकिन खाद्य उत्पादन आनुपतिक रूप से नहीं बढ़ेगा।
अतः पेयजल एवं खाद्य सामग्री की भारी कमी हो जायेगी!

लूका 10:2 में यीशु ने क्या कहा?
उसने कहा कि पके खेत बहुत है,
यीशु ने कहा कि फसल लगातार बढ़ती रहेगी!
यीशु ने कहा था जनसंख्या बिना नियंत्रण के बढ़ेगी!
आज दुनिया में प्रति सेकेण्ड 3 बच्चे पैदा होते हैं।
इसका अर्थ है कि दुनिया में एक घंटे में 11000 बच्चे जन्म लेते हैं।
एक दिन में विश्व की जनसंख्या में 2,55,000 लोगों का जीवन जुड़ जाता है!
अकेले भारत में 1.25 सेकण्ड में एक बच्चे का जन्म होता है।
एक मिनट में हमारी देश की जनसंख्या में 48 बच्चे जुड़ जाते हैं।
एक वर्ष में एक करोड़ तिरपन हजार (1,53,000) लोग
भारत के नागरिक बन रहे हैं! वे जनसंख्या बढ़ा रहे हैं!
दक्षिण अमेरिका में चिली की जनसंख्या डेढ़ करोड़ है!
भारत में हर वर्ष पैदा होने वाले शिशुओं की संख्या डेढ़ करोड़ है!
जनसंख्या के मामले में भारत चीन पर विजय हासिल करेगा

"जब मनुश्य भूमि के ऊपर बहुत बढ़ने लगे"
उत्पति अध्याय 6 यही संकेत करता है
तब वहाँ पाप, विपत्तियाँ और विनाश आया!
जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ती है, वैसे–वैसे हमें पाप, अकाल,
आपदाएं, विपत्तियाँ और कानून का
उल्लघंन देखना पड़ता है।
इसलिए यीशु ने कहा, "खेत पक चुके हैं"।
इसके द्वारा यीशु ने बताया है कि सुसमाचार का कार्य कितना महत्वपूर्ण है!
हमें कहाँ सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए,
हमें सुसमाचार का प्रचार कब करना चाहिए यह बहुत महत्वपूर्ण है।
हमें कहाँ सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए,
हमें सुसमाचार का प्रचार कब करना चाहिए यह बहुत महत्वपूर्ण है?
सुसमाचार यीशु मसीह है!
सुसमाचार का कार्य पवित्र आत्मा है!
इसलिए हमें कहाँ और कब सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए
यह पवित्र आत्मा द्वारा निर्णय लिया जाना चाहिए!
हमारा हिस्सा "प्रार्थना" करना है और ईमानदारी से प्रार्थना में लगे रहना है,
छुप–छुप कर आँसू बहाना और कूल्हे झुकने तक गहरी साँस लेना है!

दो शक्तियाँ हैं जिन्हें जनशक्ति और धनशक्ति कहा जाता है,?
इस दुनिया में अगर हम एक पार्टी का गठन करें तो हम सरकार बना सकते हैं

परन्तु सुसमाचार का प्रचार करने के लिये, परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने के लिये
पवित्र आत्मा की सहायता के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते थे!
यदि वे पवित्र आत्मा के बिना करें तो
दुष्ट आत्मा पर और उनके संगठन पर आ जाएगी
और उन पर यह कहकर विजय पा लेंगी कि हम यीशु को जानते हैं, हम पौलुस को जानते हैं
परन्तु तुम कौन हो?
और अंततः भ्रम और चीख–पुकार मच जायेगी!
भय होगा और पीछे हटना होगा!
लूका 10:2 में,
यीशु ने कहा, "खेत के स्वामी से विनती करो,
कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे"।
इस शब्द का सही अर्थ है भेजना,
"धक्का दें/धकेलना या "ताड़ना"
परमेश्वर द्वारा चुना गया पात्र को
घर में जंग लगा हुआ नहीं रहना चाहिए,
लेकिन जरूरतमंद जगह पर छलकते बर्तन की तरह बदल जाना चाहिए।
वे सभी जिन्हें प्रभु ने चुना है और अनन्त प्रेम से प्यार किया है
जिन लोगों को उसने अंजीर के पेड़ के नीचे देखा, उन सभों को वह धक्का देकर भी
आगे बढ़ाता है।
हालाँकि उसने कहा, "मैं हकलाता हूँ प्रभु"
प्रभु ने उसे तेज किया और वह फिरौन के सामने भेजा गया! (निर्गमन 3)
एक ने कहा, "मैं एक जवान आदमी हूँ"
जिसे माँ के गर्भ से चुना गया है
उसे झूठी देवी को धूप जलाने वाले लोगों की ओर धकेला गया व ताड़ना के साथ
भेजा गया। (यिर्मयाह 1)

कहाँ भेजना है और कब भेजना है
क्या निर्णय पवित्र आत्मा का है!
उस निर्णय का पालन करते हुए, कहना है
"प्रभु मैं यहाँ हूँ" फिर वह हमें भेजता है,
अगर हम कुछ बहाने कहें और आज्ञा मानने में झिझकें,
तो वह हमें धक्का देकर जबरदस्ती भी अपने कार्य के लिए भेजता है!
जब एलिय्याह को अहाब के पास जाने के लिए कहा गया तो उसने उसकी बात मानी
और कौवे ने एलिय्याह को भोजन खिलाया!
जब योना ने नीनवे जाने से इंकार किया तो उसने योना को धक्का दिया और और
उसे ताड़ना/सजा भी दिया।
उसने नीनवे के लोगों को पश्चाताप् करने के लिए तैयार किया!
दुनिया के किसी भी कलीसिया या संस्था द्वारा सुसमाचार कार्य जनशक्ति से या
धनशक्ति से नहीं किया जा सका है!
सुसमाचार का कार्य स्वर्ग का है और स्वर्ग द्वारा किया जाता है,
यदि पवित्र आत्मा आप पर जोर देता है – तो आप पृथ्वी के मनुष्यों के लिए प्रार्थन
करें और बोझ उठायें फिर उसे निभायें!
स्तिफनुस को विधवाओं की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया था,
लेकिन परमेश्वर की योजना
स्तिफनुस को आराधनालय में भेजना था,
ताकि वह उन्हें सुसमाचार समझा सके

और पुनः यीशु के पास आयें,
यह पवित्र आत्मा ही था जिसने स्तिफनुस का नेत्त्व किया!
फिलिप्पुस ने सामरिया को सुसमाचार से भर दिया
फिर यरूशलेम लौट आया,
उसे यह कहकर जंगल की ओर जाने का निर्देष दिया गया कि
वहाँ उसके लिए काम है
पवित्र आत्मा द्वारा उनका मार्ग दर्शन किया गया।
उसने इथियोपियाई अधिकारी के साथ सुसमाचार की घोषणा की
और इथियोपियाई ने बपतिस्मा लिया,
सब कुछ पवित्र आत्मा द्वारा हुआ!
पतरस जो याफा में चमड़े का काम करने वाले के घर पर रूका था
पवित्र आत्मा द्वारा कुरनेलियुस के घर जाकर अन्यजातियों से भेंट की
पौलुस और उसका दल जो आसिया प्रान्त के चारों ओर से होकर आ रहे थे पवित्र आत्मा ने उन्हें फ्रुग्रिया, गलातिया, मूसिया और बितिनिया को जाने दिया और निर्देश दिया गया कि एशिया में सेवकाई पर्याप्त हैं, पवित्र आत्मा ने कहा अब वे (मकिदुनिया) यूरोप में प्रवेश करें!
(प्रेरितों के काम 16)

जैसा कि यह निर्देश दिया गया था कि सुसमाचार का प्रचार कहाँ करना है और
पवित्र आत्मा आग्रह करता है और बताता है

सुसमाचार का प्रचार कब करना है!
सुसमाचार के कार्य के लिए दिन और रात का समय है,
सुसमाचार के लिए खुले और बंद दरवाजे भी हैं,
खुल हृदय और कठोर हृदय वाले लोग होते हैं,
"जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है,
क्योंकि वह रात आने
वाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता"।
(यूहन्ना 9:4) इस पद का क्या अर्थ है?
यह बात करता है कि सुसमाचार का कार्य कब किया जाना चाहिए!
यह पद हमें बताता है कि दिन होने पर ही काम करना चाहिए!
दुनिया में उन दिन का समय वे दिन होते हैं जब आप ताकत के साथ स्वस्थ रहते हैं!
उन दिनों को सुसमाचार कार्य देने के लिए स्वयं को बदलें!
दिन का समय वह समय है जब दरवाजे खोले जाते हैं!

कार्यकर्ताओं को उन अवसरों को कभी नहीं चूकना चाहिए!
संत पौलुस 2 तीमुथियुस अध्याय 2 और 3 में स्पष्ट रूप से कहते हैं
दुनिया की चमक–धमक और सनक से
मनोरंजन, फिल्मों और दोस्तों के साथ रिश्ते के कारण विश्वासियों एवं
कार्यकर्ताओं के पास
अवसरों को खोने का मौका है।
भजन संहिता 104:23 कहता है, "तब मनुष्य अपने काम के लिए और
संध्या तक परिश्रम
करने के लिए निकलता है"।

लेकिन लूका अध्याय 16 कहता है
शाम हो गयी और रात भी बीत गयी, अर्थात विलम्ब हो गया तब
धनवान सुसमाचार के कार्य के लिए दौड़ता है कि
"लाजर को मेरे पिता के घर भेज दें

क्योंकि मेरे पाँच भाई और हैं (लूका 16:27,28) यह कहते हुए
वह नरक से पृथ्वी तक सुसमाचार का कार्य शुरू करना चाहता है
और इसके लिए वह स्वर्ग को अनुरोध भेजता है!
उसका दिन का समय बहुत अच्छा था!
वह पूर्ण आन्नद के साथ था,
वह धन और वचन से समृद्ध था!
किन्तु जब दिन था
तब उसके और उसके परिवार के सदस्यों को
स्वर्ग की अभिलाशा न थी!
अब रात को नरक में
उसे स्मरण आता है –
और वह रोता है – प्रभु, मैंने दिन का समय बर्बाद कर दिया

वह निराशा में हैं,
वह इब्राहीम की ओर रोता है–
उसे अपेक्षित उत्तर नहीं मिला!
उसका अनुरोध अस्वीकार कर दिया गया!
उसके टूटे हुए ह्रदय का कोई सम्मान नहीं था!
उसके आसुँओं की चिंता करने वाला कोई नहीं था!

पवित्र आत्मा हमें निर्देश देता है कि सुसमाचार का कार्य कब करना है :

हमें बुरे दिनों के आने से पहले यह करना चाहिए!
ज्ब वह आपको पूर्णकालीन सेवा के लिए बुलाता है
काम पर जाएं,
जब वह आपको एक गाँव गोद लेने का निर्देश देता है
या किसी कार्यकर्ता का सहयोग करने के लिए कहता है तब यह अवश्य करें!
इससे पहले कि विपत्ति के दिन और
वे वर्ष आयें, जिनमें तू कहे कि मेरा मन इनमे नहीं लगता उससे पहले करो।
इससे पहले कि मिट्टी ज्यों कि त्यों मिट्टी में मिल जाए, और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे
दिया है, लौट जाए, काम कर लें! (सभों.12:1)

पौलुस कहता है कि इफिसुस में द्वार खुला है!
"क्योंकि मेरे लिए वहाँ एक बड़ा और उपयोगी द्वार खुला है,
और विरोधी बहुत से हैं (1कुरि.16:9)
उन लोगों से नहीं जो मेरा विरोध करते हैं
परन्तु पवित्र आत्मा द्वारा मेरा निर्णय हो गया जो द्वार खोलता है!
पौलुस कहता है कि यद्यपि शक्ति और पराक्रम वाले लोग आएंगे
किन्तु पवित्र आत्मा जो कहेगा वही मेरा निर्णय होगा!
दिन का समय, जीवन काल, स्वस्थ शरीर,?
सेवा के लिए आगे बढ़ने के लिए शारीरिक रूप से मजबूती!
खुले दरवाजे–परमेश्वर ने जन–जातीय समूह, राज्य, जिले और गाँव दिखाए हैं!
कहाँ– जहाँ पवित्र आत्मा निर्देशित देता है – वहाँ!
कब – जब पवित्र आत्मा निर्देशित देता है – तब!
स्वर्गीय पिता का शब्द परिवार/घर के लिए आखिरी शब्द होता है!
किसी भी देश में प्रधानमंत्री के शब्द ही अंतिम वचन होते हैं!
सुसमाचार कार्य में

पवित्र आत्मा का वचन ही अंतिम वचन है!
जो लोग उस वचन का विरोध करते हैं वे जीवित नहीं रह सकते!
जो लोग उसके वचन का पालन करते हैं
वे हामान की नाई जंगली मनुष्यों के बीच भी नाश न किये जाएंगे!
वे सम्बलत और तोब्बिय्याह के रूप में पकड़े नहीं जायेंगे!
हालाँकि आग सात गुना बढ़ चुकी थी।
यद्यपि वे जलकर राख हो सकते थे!
उन्हें शेरों के बीच फेंक दिया गया
किन्तु उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ!
यद्यपि उन्हें जेल में डाल दिया गया,
फिर भी सेवकाई बंद नहीं हुई!

प्रियों मित्रों,
दुनिया में जनसंख्या बढ़ रही है और अब शिश्यों को भी बढ़ाना होगा!
अर्थात आप को और मुझे इस दुनिया में उसने बनाए रखा है!
यही वह है जिसके कारण हमारे पास दिन का एक समय है!
दिन के समय के दौरान
जहाँ पवित्र आत्मा सुसमाचार का प्रचार करने का निर्देश देता है
इसका प्रचार करो!
उन लोगों के लिए जो आज्ञाकारी हैं
उनके लिए रात का कोई समय नहीं है!
उनके लिए इस संसार में दिन का समय होगा
और यदि वे इस दुनिया को भी छोड़ दें!
तौभी यह वह उपहार है जो स्वर्ग आपको देता है!
आमीन!

प्रार्थना

हे प्रभु, जिसने अपने एकलौते पुत्र को स्वर्ग से पृथ्वी पर उद्धारकर्ता के रूप में भेजा है वे सभी जिन्होंने उसे परमेश्वर और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है, उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा परिवर्तित किया गया ह ताकि वे यीशु के बारे में प्रचार करें, और उनके अंतिम आदेश का पालन करें।
घरों को प्रार्थना के घरों में बदल दिया जाएं, कलीसिया/आराधना भवन बिना खाली स्थान के पूर्ण भरे रहें,
जनसंख्या के समान ही चेलों/शिष्यों की संख्या बढ़ें!
ऐसा हो कि हृदयों में निवास पाए बिना शैतान कष्ट सहे!
हे प्रभु, पूरी सामर्थ से, हर पीढ़ी को इसका अनुभव हो,
प्रत्येक घुटना झुके और प्रत्येक जीभ स्वीकार करें!
वे यीशु को अपने जीवन और दिनचर्या के रूप में अनुभव करें!
वे इस संसार में और अनन्त संसार में अनन्त काल तक जीवित रहें!
हमारे यीशु के मधुर नाम में, आमीन!

ऑनलाइन दान भेजें

Bank : State Bank of India A/C Name: VISHWA VANI
A/C No. : 10151750252 IFS Code : SBIN0003273
Branch : Amanjikarai, Chennai - India.
Please update us with the transaction info to acknowledge it with Receipt
Contact ✆ 9443127741, 9940332294

UPI ID
vvadmin@sbi
UPI Name:
VISHWAVANI

नेटवर्क चेयरमैन की ओर से...

उन सभी को मेरा मसीही नमस्कार जो यीशु मसीह के नाम पर हर महीने समर्पण पत्रिका पढ़ते हैं।

प्रत्येक सेवकाई दौरे के दौरान पवित्र आत्मा मुझे जो नए अनुभव देता है और जीवित गवाहियाँ जो मैं सुनता हुँ, वे मुझे सुसमाचार की शक्ति को जानने और समझने में सक्षम बनाती हैं। ज्योंही ही हमारी आत्मा आनदिंत होती है, हम अपनी शारीरिक थकान भूल जाते हैं। प्रभु की स्तुति हो!

"नल्लामलाई" में बाघ, हिरण, भालू, सांप और अन्य जंगली जानवरों का घना जंगल है! यह तेलंगाना राज्य के नगरकुर्नूल जिले की सीमा में है। एक यात्रा समूह के रूप में, हमने 11 फरवरी, रविवार को तड़के हैदराबाद से अपनी यात्रा आरम्भ की। हम लिंगाला मंडल में चेन्नमपल्ली कार्य क्षेत्र की ओर बढ़े। इस गाँव में बहुत से चेंचू विश्वासी लोग हैं। इसलिए, तमिल क्रिश्चयन फेलोशिप कलीसिया के विश्वासी इस गाँव में एक आराधना भवन के निर्माण के लिए आगे आए हैं। पासवान पीटर प्रिंस और उनकी पत्नी ने हमारे साथ यात्रा की। यह हमारे लिए बहुत बड़ी आशीष थी!

पवित्र आत्मा ने मुझे इस लेख को इस क्षेत्र और इसकी सेवकाई के परिचय के साथ शुरू करने के लिए प्रेरित किया था। भाई मंडी बयाना ने 10वीं कक्षा पास कर ली थी। जिन चेंचू ग्रामवासियों ने 10वीं कक्षा पास कर ली है, वे सरकारी नौकरी पाने के लिए योग्य/सक्षम हैं। इसलिए, उन्होंने 1992 से 2004 तक 12 वर्षों तक सिरिगिरी पाडु गाँव में एक शिक्षक के रूप में काम किया। किन्तु जब वह सच्चे परमेश्वर को कभी नहीं जान पाया, तो वह शराब का आदी हो गया, और अधर्मी जीवन व्यतीत करने लगा। बाद में टी.बी.रोग से संक्रमित/प्रभावित हो गए। उन्हें लगातार खांसी आती रहती थी। उन दिनों विश्ववाणी के प्रचारक उनसे मिलने जाते रहे और उनके साथ सुसमाचार बांटते रहे। उस सेवक ने यीशु के नाम से उनके चंगाई के लिए प्रार्थना की और भाई बयाना पूरी तरह से ठीक हो गये। वह मसीह में एक नई रचना बन गये। उनकी पत्नी और 5 बच्चे भी मसीह में एक नई सृष्टि बन गए। बयाना ने जाना और स्वीकार किया कि यीशु ही प्रभु है। वह अपने अनुभव को अपने लोगों के साथ बांटना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी छोड़ दी और 2006 में एक पूर्णकालिक सेवक के रूप में विश्ववाणी में शामिल हो गए। परमेश्वर ने उस समय भाई बयाना का उपयोग पहली बार चेन्नमपल्ली ग्रामीणों के साथ सुसमाचार प्रचार करने के लिए किया था। बयाना स्वंय चिंताला, मडिमाडुगु, लक्ष्मापुरम और अखाराम कार्य क्षेत्रों में सुसमाचार प्रचार करने के कारण थे। जहाँ चेंचू जन–जाति के लोग रहते हैं। उन्होंने सुसमाचार के माध्यम से उन लोगों को उन बंधनों से छुटकारा दिलाया जो शराब, अज्ञानता, पाप और अभिशाप के आदी थे। उन्होंने मसीह में परिवारों का निर्माण जारी रखा। हाँ, चेन्नमपल्ली लोग और उनके और उनके गाँव अब प्रभु में खुश हैं। मैं बयाना के शब्दों को सुन सकता था जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया था, "मैंने बनाला और लिंगाला मंडलों के 163 चेंचू गाँवों का सर्वेक्षण किया है। उनमें से 92 गाँवों में हम तुंरत सेवकाई शुरू कर सकते हैं"। यह मकिदुनियाई पुकार/बुलाहट मेरे कानों में गूंज रही थी! अब हमें ऐसे लोगों की जरूरत है जो प्रचारक/सेवक भेजें और गाँवों का सहयोग करें। रेव्ह.बयाना चेंचू जन–जाति लोगों के बीच सेवकाई के लिए अगुवा हैं और वह आराधना भवन की उन्नति कार्यों की देखभाल करते हैं और वर्तमान मे वटवरलापल्ली सेवकाई क्षेत्र से काम रहे हैं।

पौलुस के पास हमेशा सुसमाचार क्षेत्र में तीमुथियुस होता है! बयाना ने भी ऐसी ही किया। आज सुसमाचार सेवक वेलाकन्नैया चेन्नमपल्ली में काम कर रहे हैं जहाँ बयाना पहले काम कर रहे थे। वेलाकन्नैया ने अपनी 12वी कक्षा और कृषि की पढ़ाई पूरी कर ली है। अतः उन्होंने 3 साल तक एक शिक्षक के रूप में काम किया और साथ–साथ कृषि कार्य भी किया। वह एक समय नशे के आदी थे और दुष्टता से भरा जीवन व्यतीत कर रहे थे। वह अपने काम के सिलसिले में पेट्रालचेनपेंटा गाँव आये

थे। यह गाँव विश्ववाणी का कार्य क्षेत्र था, और यह 100 प्रतिशत विश्वासियों के साथ पूरी तरह से बदल हुआ गाँव है। इसमें एक खूबसूरत सा आराधना भवन है। वे ग्रामवासियों के अनुशासित जीवन से आकर्षित थे! उन्हें विश्ववाणी रेडियो कार्यक्रम के माध्यम से यीशु मसीह के बारे में पता चला और उन्होंने उस यीशु को व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। बाद में उन्होंने विश्ववाणी आराधना भवन के एक सदस्य की बेटी से विवाह किया और विश्वास में उन्नत होते गए। वह वहाँ रहते हुए अपने लोगों तक पहुँचने के बोझ से भर गए थे और इसलिए उन्होंने 2018 में अपनी सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और 2019 से चेन्नमपल्ली कार्य क्षेत्र में विश्ववाणी के साथ अपनी सेवकाई को शुरू कर दिया। मुझे सेवा में उनकी धर्मपत्नी और 4 बच्चों से मिलकर खुषी हुई जो परमेश्वर के उत्साह से भरे हुए थे!

सेवकाई 6 चेंचू सेवकों के माध्यम से चेन्नमपल्ली क्षेत्र के 30 गाँवों में चलायी जाती है। चेन्नमपल्ली में हम जो आराधना भवन बना रहे हैं वह इस क्षेत्र का पहला आराधना भवन है! प्रभु ने विश्वासियों की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और इसे "तमिल क्रिश्चयन फेलोशिप कलीसिया" के माध्यम से पूरा किया। आराधना भवन के लिए जमीन गाँव के बाहरी इलाके में खरीदी गई और यह पहाड़ की तलहटी में हैं। वहाँ एक छोटा सा झरना है और ठंडी, हल्की हवा हमेशा उस क्षेत्र को ढके रहती है। इसी शांत वातावरण में दिनांक 11.02.2024 को आराधना कार्यक्रम आयोजित हुआ। तेलंगाना राज्य समन्वयक ने आराधना सेवा का संचालन किया, डॉ.पी.जे.भक्ता वत्सलम ने आराधना संदेश दिया। पासवान पीटर प्रिंस द्वारा परमेश्वर के वचन और सेवकाई में उनकी कलीसिया भागीदारी के बाद श्रीमती पीटर प्रिंस ने अपनी गवाही सबके साथ साझा की।

पासवान प्रिंस ने कहा, "हमारे आराधना भवन में लगभग 100 विश्वासी हैं। उनमें से अधिकांश लोगों के पास अच्छी तनख्वाह वाली नौकरियाँ नहीं हैं! वे विनम्र लोग हैं जो छोटा–मोटा काम करते हैं। लेकिन उनके पास सेवकाई के लिए एक दर्शन है। वे प्रतिदिन बड़े बोझ और चिंता के साथ सुसमाचार सेवकों के लिए प्रार्थना करते हैं। हमारी कलीसिया भारत के सभी राज्यों में आराधना भवन बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। हमने अब तक कई आराधना भवनों का निर्माण किया है। ऐसे सदस्य हैं जो अपने कार्यालयों में ओवरटाइम काम करते हैं और आराधना भवन के निर्माण के लिए सहयोग करते हैं। अपने काम के घंटों के अलावा, अपने खाली समय के दौरान, वे वाहनों की देखभाल करते हैं और कुछ छोटे काम करते हैं। वे अपनी उस आय को आराधना भवन निर्माण के लिए देते हैं। इसलिए, हम उन स्थानों पर आराधना भवन स्थापित करने में सक्षम हैं जहाँ इसकी अत्यधिक आवश्यकता है" – पासवान प्रिंस के इन शब्दों ने चेन्नमपल्ली के विश्वासियों को परमेश्वर के काम में और मजबूत किया। हम भाई पीटर प्रिंस और उनके परिवार और उनकी कलीसिया के सदस्यों को धन्यवाद देते हैं जो चेन्नमपल्ली में एक आराधना भवन का निर्माण करने के लिए आगे आए हैं जो मनुष्यों की नजरों से छिप सकता है लेकिन परमेश्वर से नहीं।

आप एक कलीसिया होकर गाँवों को सहयोग दे सकते हैं और उन गाँवों में सुसमाचार सेवकों को भेज सकते हैं और जरूरतमंद गाँवों में आराधना भवन बना सकते हैं ताकि वहाँ की भूमि परमेश्वर को जान सके।

"भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पायेंगे" (उत्पति 12:3)

13.02.2024 मसीह में आपका भाई

हैदराबाद *पी. सेल्वाराज, अध्यक्ष विश्ववाणी नेटवर्क*

धन्य हैं जो मणिपुर से प्रेम करते हैं

विश्ववाणी के कार्यकारी निर्देशक ने अन्य निर्देशकों, समन्वयकों और सुसमाचार प्रचारकों के साथ 17 से 23 जनवरी तक तीसरे स्तर के राहत कार्यक्रम के माध्यम से मणिपुर के क्षेत्रों मे परमेश्वर के प्रेम को बांटा। उन्होंने क्षेत्रीय कलीसियाओं, सुसमाचार प्रचारकों और उनके परिवारों का दौरा किया। उन्होंने उन्हें मसीह में सांत्वना दी और प्रार्थना के माध्यम से उन्हें मजबूत किया। मणिपुर का यह छोटा सा समूह गवाह बनकर चमक रहा है जबकि सामान्य स्थिति अब तक भी वापस नही आई है। वे निरंतर कहते रहते हैं कि यीशु ही उनका जीवन है और हम इन गवाहियों को आपके साथ बांटते हैं ताकि आप प्रार्थना में उनकी सहायता करना जारी रखें।

उन काले बुरे दिनों के दौरान, हमारे (मेरी पत्नी और तीन बच्चों) के पास आँसू और पानी के अलावा खाने के लिए कुछ नहीं था। हम अपनी आँखों के सामने आपदा को देख सकते थे। हमारी एकमात्र आशा "यीशु के नाम पर प्रार्थना" थी। मैं प्रभु की स्तुति करती हूँ जो अब तक हमारे प्राणों की रक्षा करता आया है। मैं विश्ववाणी सेवकाई दल को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने हमें कपड़े, चादरें और एक महीने का सामान दिया है। *– एमनेई कॉम, सिनामकोम*

मेरा परिवार दो समस्याओं/मझधार के बीच जूझ रहा था, यीशु को छोड़ दो अन्यथा गाँव छोड़ दो। गाँव वालों ने हमें धमकाया और हमसे नफरत की। वहाँ कड़वाहट, उपहास और भूख थी। लेकिन मैं यीशु को कभी नहीं छोड़ना चाहता था! हमने उस कठिन समय के दौरान परमेश्वर का वचन बोलना कभी बंद नहीं किया! परमेश्वर ने अनुग्रह पूर्वक हमारी रक्षा की है। 3 मई के बाद हमारे गाँव में कोई सभा नहीं हुई है। लेकिन हम मोबाइल के माध्यम से परमेश्वर का वचन सुन रहे हैं और दैनिक मन्ना के माध्यम से हमें सांत्वना मिल रहा है। हमारे राज्य की शांति के लिए प्रार्थना करना न भूलें। *– कांता सिंह, काकचिंग*

हम अपने कलीसिया के माध्यम से विश्ववाणी सेवाओं में सहयोग करते हैं। हमारे आराधनालय में 20 बचत बॉक्स हैं। हम छह महीने में एक बार विश्ववाणी क्षेत्र की सेवाओं के लिए दान जमा करते है। हमने कभी उम्मीद नहीं की थी कि परमेश्वर हमारे छोटे–छोटे प्रयासों का प्रतिफल देंगे। हिंसा के समय जब हम भूखे थे, विश्ववाणी सेवकों ने हमारी भौतिक आवश्यकताओं के लिए 20 बोरी खाद्य पदार्थों को पहुँचाया। हम अपने कलीसियाओं की ओर से विश्ववाणी सेवकाई एवं सेवकों को हृदय से धन्यवाद देते हैं। *– कोइटे कलीसिया*

हम विश्ववाणी सेवाओं के माध्यम से आशीषित हुए हैं। इसलिए, हमने मणिपुर राज्य के लिए प्रार्थना करना और बचत बक्सों के माध्यम से विश्ववाणी सेवकाई का सहयोग करना शुरू कर दिया। जिस भीड़ ने हर गाँव पर हमला किया, वह 3 मई को हमारे गाँव में भी आयी। हमने शिशुओं को अपने कंधों और पीठ पर लाद लिया और हम अपनी जान बचाने के लिए दौड़ पड़े। कुछ ही मिनटों के बाद हमारा अपना घर हमारे ही सामने राख में तब्दील हो चुका था। हम राहत शिविर में आए और एक वक्त के खाने के लिए हमें दूसरों से भीख मांगनी पड़ी। हमारे छोटे बच्चों को हमसे अधिक कष्टों का साम्हना करना पड़ा। हम अपने घर से खाली हाथ निकले थे और हमारे पास जो कुछ भी है वह "यीशु" है और वह ही एकमात्र खजाना है। हमारे हृदयों पर हमारे घरों से ज्यादा क्षतिग्रस्त आराधना भवनों का बोझ है। यीशु ने कहा... "ऐसा कोई नही, जिसने मेरे और सुसमाचार के लिए घर या भाईयों या बहनों या माता या पिता या बाल–बच्चों या खेतों छोड़ दिया हो, और अब इस समय सौ गुना ना पाये घरों और भाई बहनों और माताओं और बाल बच्चों और खेतों को पर सताव के साथ और परलोक में अनंत जीवन। (मरकुस 10:29,30)। हम इस महान आशीष के प्राप्तकर्ता बन गए हैं। प्रभु की स्तुति हो! *– मैंगनियो, सरोनफाई*

यीशु, हमारी सांत्वना...

जो बुरी चीजें मैंने देखी और अपने जीवन में अनुभव की है, उनसे मुझे मेरे हृदय में गहरी चोट लगी। 3 मई की शाम 5 बजे जब मैंने सौ से अधिक हथियारबंद लोगों को हमारे घर के आस पास देखा तो मैं भय और कम्पन से भर गया! हम भागने लगे, हमने खेत में लगी फसलों के पीछे शरण ली। उन्होंने हम पर हमला कर दिया, जब कभी भी मैं उस जानलेवा और भयंकर दिन के बारे में सोचता हूँ तो मेरी आँखें भर आती हैं। मैं उसके बारे में सोचे बिना नहीं रह सकता। सकंट के दिनों, हमारे लिये यीशु ही एकमात्र सांत्वना था। परमेश्वर का वचन ही हमारा एकमात्र सहारा था और हमारी एकमात्र आशा अनन्त जीवन थी। हमें विश्वास है कि हम उस महिमामय दिन पर अपने बेटे से अवश्य मिलेंगे!

हमें विश्ववाणी सुसमाचार सेवकों के माध्यम से सांत्वना, प्रार्थना और सहायता मिली है जिन्होंने तीन बार हमारे राहत केन्द्र का भ्रमण किया और हमें राहत सामग्री दी! उन सेवकों ने देखा कि हमारे राहत केंन्द्र में भारी बारिश और ठंडे मौसम में भी 5 लोगों के लिए केवल एक ही कंबल था। इसलिए, उन्होंने हमारे लिए कंबल वितरित किए और उनके द्वारा हमारे लिए यह एक बड़ी मदद थी! हम उन सभी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने मुसीबत के दिनों में हमारी मदद की। प्रभु की स्तुति हो! *– हटबोई, कांगवई*

मैं नहीं लेकिन मसीह!

– रेव्ह. डॉ. पोन सुबर्सन

पौलुस का जीवन और पश्चाताप् बाइबल में चित्रित कई परिवर्तनों में से एक है, जो बहुतों का ध्यान अपनी ओर खींचता है! यीशु मसीह के पुनरूत्थान और पौलुस के हृदय परिवर्तन से हमें मसीही विश्वास के महत्व का पता चलता है। मृतकों का पुनरूत्थान केवल यीशु मसीह के द्वारा ही होता है। उसी प्रकार हृदय में पश्चाताप् भी प्रभु के द्वारा ही उत्पन्न होता है। यह वह है जो लोगों की परिस्थितियों के बावजूद उनके हृदयों को परिवर्तित कर सकता है।

इस बात पर बहस करने वाले अनेक लोग है कि ऊपर उल्लिखित ये दो घटनाएं कभी नहीं हुई। अनुसंधान विद्वान गिल्बर्ट वेस्ट और लॉर्ड लिटलन ने यह साबित करने के लिए कई सर्वेक्षण किए की ये घटनाएँ फर्जी मात्र थी। लेकिन इसके विपरीत उन्होंने पाया कि वे सौ प्रतिशत सच्ची घटनाएँ थी। और यह उन्होंने अपनी पुस्तक "ऑब्जर्वेशन ऑफ शाऊल कन्वर्जन" में लिखा है। शाऊल कौन है? उसका परिवर्तन क्या था? आइये, इस पर विचार करें।

जब हम शाऊल का नाम सुनते हैं, तो हम तुरंत पुराने नियम के राजा शाऊल के बारे में सोचते हैं। इब्रानी में शाऊल का अर्थ है "प्रार्थना की या प्रार्थना की और प्राप्त किया"। यह नाम फिलिस्तीन में आम था। जब शाऊल का हृदय परिवर्तन हुआ, तो हमें लगता है कि उसका नाम बदलकर पौलुस कर दिया गया। लेकिन यह उसका रोमन नाम था। इसका मतलब है "छोटा" शाऊल ने अपने हृदय परिवर्तन के बाद विनम्रता के प्रतीक के रूप में पौलुस नाम का उपयोग किया और इसलिए भी उसे अन्यजातियों के बीच सुसमाचार प्रचार करने के लिए परमेश्वर द्वारा चुना गया था, जैसा की कुछ बाइबल विद्वान कहते हैं, वह यह चाहता भी था कि उसे पौलुस कहा जाए।

हम इस घटना के माध्यम से अनुभव कर सकते हैं जो चीजें मनुष्यों के लिए असंभव हैं वे परमेश्वर के लिए संभव हैं और कलीसिया को यीशु मसीह के लहू के द्वारा खरीदा गया और उसकी दृष्टि उन पर बनी रहती है। शाऊल एक यहूदी और फरीसी था। उसने कानून/व्यवस्था ठीक से सीखा और यहूदी परंपराओं में पारंगत था। परन्तु उसे यह विश्वास नहीं था कि यीशु ही मसीह था। वह विश्वासियों को मार डालना चाहता था। उन्होंन दमिश्क में विश्वासियों और मसीहियों को बांधने और उन्हें यरूशलेम ले जाने के लिए लगभग छः ह दिनों तक 130 मील की यात्रा की! उसे विश्वासियों को परेशान करने में क्यों दिलचस्पी थी? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह सोचता था कि वह निर्दोश है! प्रेरितों के काम 26:9 कहता है,"मैं ने भी समझा था कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में मुझे बहुत कुछ करना चाहिए"।

यूहन्ना 16:2 में यीशु ने यह कहा है "वरन् वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूँ"। यह स्थिति आज भी कुछ कलीसियाओं में देखने को मिलती है।

जो लोग यीशु मसीह से प्रेम नहीं करते है, जो परमेश्वर के वचन को ठीक से नहीं समझते तथा केवल अपने विचारों और मन में उत्साही हैं उनके द्वारा लिए गए निर्णय सदैव असफल होंगे। पौलुस कहता है, "क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे ये काम किए थे" (1तीमु.1:13)। मसीह को स्वीकार करने से पहले पौलुस अपने विचारों और विचारधाराओं पर घमंड करता था। लेकिन जब उसे प्रभु द्वारा बचाया गया तो उसने कहा कि उसने बिन समझे बुझे ऐसा किया। हाँ, परमेश्वर मानव जाति को विश्वासी और अविश्वासी के रूप में देखता है! ये बातें मसीहियों में भी देखी जाती हैं! इससे हमें यह भी पता चलता है कि वे सभी जो अपने अविश्वास और विचारों के कारण परमेश्वर की संतानों और परमेश्वर के भवन के विरूद्ध आते हैं, उन्हें परमेश्वर का सामना करना पड़ेगा।

यहाँ शाऊल ने योजना बनाई और दमिश्क चला गया। परन्तु वह विश्वासियों और शिष्यों तक पहुँचने में असमर्थ था। परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और उसने अपनी दृष्टि खो दी। उसने विश्वासियों को बाँधने और उन्हें यरूशलेम ले जाने के बारे में सोचा लेकिन फिर उसकी दृष्टि खो जाने के कारण

किसी को उसकी सहायता करनी पड़ी। जब शाऊल को यीशु मसीह ने छुआ तो वह परिवर्तित हो गया। उसने यीशु पर विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। अंततः वह मसीह में एक नई सृष्टि बन गया।

यीशु मसीह को स्वीकार करने वाले व्यक्ति के जीवन में जो पहली घटना घटती है वह पश्चाताप् है। यह मसीह के द्वारा है, और यह एक बड़ा आश्चर्य है। यह व्यक्ति को पूरी तरह से बदल देता है। ऐसे लोग भी हैं जो हृदय परिवर्तन किए बिना धार्मिक कानूनों और नियमों का पालन करते हैं। यद्यपि उनका विश्वास बदल गया है, किन्तु वे कभी भी अपने अतीत और वर्तमान जीवन के बीच के अंतर का एहसास नहीं कर पाते हैं। पौलुस का जीवन पूरी तरह से बदल गया था, और हम इसे गलातियों 1:23–24 में देख सकते हैं "जो हमें पहले सताता था, वह अब उसी विश्वास का सुसमाचार सुनाता है जिसे पहले नष्ट करता था"। और वे मेरे विषय में परमेश्वर की महिमा करती थीं!

क्या वे लोग, जो हमें देख रहे हैं, हमारे कारण परमेश्वर की स्तुति कर रहे हैं? पौलुस का परिवर्तन/बदलाव संसारिक नहीं था। यह किसी स्थिति का परिणाम नहीं था। यह मसीह के साथ उसकी मुठभेड़ का परिणाम था। "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझमें जीवित है, और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ, केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपने–आप को दे दिया" (गला.2:20)। इसके बाद, यह मेरे विचार, मेरी अभिलाषा या मेरी इच्छा नहीं है! क्या हम पौलुस के साथ मिलकर यह कह सकते हैं कि उसकी इच्छा मेरे जीवन में पूरी होगी। तब हमारे पास उन आशीषों की प्रशंसा करने के लिए शब्द नहीं होंगे जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं! उन ईश्वरीय आशीषों को अपने जीवन का हिस्सा बनने दें!■

उद्धार का पात्र प्राप्त हुआ...

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा घाटी में कई परिवार शराब की लत में पड़े हैं। मेरे पति भी इसके आदी थे और इसलिए हमारी आर्थिक स्थिति बद से बदतर हो गई! परिवार में कोई आमदनी नहीं थी। हमारे बीच लगातार लड़ाई–झगड़े होते रहे और हमने अपनी शांति खो दी। हमने सोचा कि उसे अलग अलग उपायों से ठीक किया जा सकता है। लेकिन इससे हमारा खर्च ही बढ़ा, किन्तु सफलता नहीं मिली।

हमारी गली में मैंने देखा की कुछ महिलाएँ बहुत आन्नंदित थी। मैं भी उनकी संगति में जाने लगी। मुझे बाइबल के माध्यम से वह शांति प्राप्त हुई जो संसार नही दे सकता था। मैंने प्रार्थना प्रारम्भ कर किया और मैं ने यीशु के नाम पर विश्वास किया। परमेश्वर के वचन ने मुझे और मेरे माध्यम से मेरे पति के हृदय को भी छुआ। उन्होंने अब वचन द्वारा शराब न पीने का निर्णय लिया है। आज हम एक परिवार के रूप में आन्नंद से यीशु की आराधना कर रहे हैं और निश्चित रूप से हमारे लिए ये अनुग्रह के दिन हैं। हाँ, उन सभी का जीवन धन्य और आशीशित हैं जो यीशु की ओर देखते हैं। हाल्लेलुय्याह! *– पुष्पा देवी, छत्तर कार्यक्षेत्र*

यीशु मेरी अभिलाषा और चाहत है

बाइबल पकड़ कर चलने वालों और यीशु की आराधना करने वालों का मजाक उड़ाना ही मेरी दिनचर्या थी। मैं उनसे नफरत करता था और उनसे झगड़ा किया करता था। जितना मैं उनसे नफरत करता था, उतना ही वे मुझसे सबसे ज्यादा प्रेम करते थे। मेरे शब्द दिन–ब–दिन कठोर होते जा रहे थे, लेकिन सेवक भाई के प्रेम पूर्ण शब्दों और उनकी मुस्कान ने मेरे हृदय को पिघला दिया। जहाँ मैं रहता हूँ, खरदोड़ी गाँव में मैंने विश्वासियों के बीच यीशु के प्रति प्रेम देखा। यूहन्ना 3:16 के माध्यम से मेरे जीवन की एक नई शुरूआत हुई। उन्होंने कभी कोई जबरदस्ती नही की। किसी ने मुझे जबरदस्ती नहीं बुलाया। मैंने स्वयं विश्वासियों की संगति में भाग लेना शुरू कर दिया। यीशु मसीह बहुत ही अच्छा है जिसने बहुत ही कम उम्र में मेरे हृदय में परमेश्वर के जीवित वचन की इच्छा बो दी है। *– विशाल लकड़ा, छत्तीसगढ़।*

अभी निर्धारित समय है
अभी ही उद्धार का दिन है

– रेव्ह. डॉ. इम्मानूएल ग्नानाराज, निर्देशक – प्रेयर नेटवर्क

मानवता के पास दूसरों के लिए समय नहीं है, वे कभी नही समझ पाते कि वे कहाँ जा रहे हैं और हमें उन्हें रोकना होगा क्योंकि वे अनंत विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। बाइबल में ऐसे कई चेतावनी पूर्ण संकेत/चिन्ह हैं जो हमें अपनी दिशा को सही मार्ग की ओर मोड़ने में मदद करती है। पहली चेतावनी अदन के बगीचे में शुरू हुई जहाँ उन्हें चेतावनी दी गई कि जिस दिन वे फल खाएंगे उसी दिन वे मर जाएंगे। ये चेतावनियाँ इतिहास में हर कदम पर दी जाती है। हम जीवन की शुरूआत यह जाने बिना ही करते हैं कि हम कहाँ जा रहे हैं और कयों जी रहे हैं। बाइबल मानव जाति के लिए कई चेतावनी और सलाह से भरी हुई है।

"आओ, सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ, और जिनके पास रूपया न हो, तुम भी आओ, मोल लो, और खाओ!

दाखमधु और दूध बिन रूपये और बिना दाम ही आकर ले लो। जो भोजन वस्तु है ही नहीं, उसके लिए तुम क्यों रूपया लगाते हो, और जिससे पेट नहीं भरता उसके लिए क्यों परिश्रम करते हो? मेरी ओर मन लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुएं खाने पाओगे और चिकनी–चिकनी वस्तुएं खाकर संतुष्ट हो जाओगे"। (यशायाह 55:1,2)

जब कभी तुम दाहिनी या बाईं ओर मुढ़ने लगो, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, मार्ग यही है, इसी पर चलो"। (यशायाह 30:21)

यीशु मसीह स्वयं को मार्ग, सत्य और जीवन के रूप में प्रस्तुत करता है (यूहन्ना 14:6)। लेकिन मत्ती 11:28 में एक महान बुलाहट है" हे सब थके और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, मैं तूम्हें विश्राम दूंगा"। वह सब थके हुओं को बुलाता है, और विश्राम देता है। जो लोग पाप के कारण परमेश्वर से संपर्क खो चुके हैं, उन्हें उद्धार पाने के लिए कई कदम उठाने पड़ते हैं। उन्हें प्रभु के साथ मेल–मिलाप करना कठिन लगता है। प्रभु यीशु मसीह की मध्यस्था द्वारा ही पापी को परमेश्वर के साथ एक किया जा सकता हैं उसने अपना बहुमूल्य लहू दिया और मानव जाति को छुटकारा दिलाया। उसके द्वारा छुटकारे के द्वारा मनुष्यों के साथ अपने सम्बंध को स्थापित किया। इसलिए, यही उसके लिए

अति आवश्यक और सबसे महत्वपूर्ण कार्य था!

1. सुसमाचार का प्रचार करना आवश्यक है

मनुष्य इस संसार में परमेश्वर रहित जीवन व्यतीत करता है और वही करता है जो उसका हृदय और शरीर चाहता है। इस प्रकार वह नरक की ओर अग्रसर हो जाता है। पापों की क्षमा के संदेश का प्रचार करना और पापों से कैसे क्षमा प्राप्त किया जा सकता है, इसकी आवश्यकता है। उस उद्धार की घोषणा करना महत्वपूर्ण है जो हमें प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से मुफ्त में मिलती है। भिखारी ही बता सकता है कि भीख मांगते समय उसके पास पैसे कहाँ से आये। यदि यीशु ने आपके पापों को क्षमा कर दिया है और यदि आपके पास पापों की क्षमा का आश्वासन है, तो यह आपका कर्तव्य है कि आप इसे दूसरों के सामने प्रचार करें और जाहिर करें। यदि जो जानते हैं वे प्रचार नहीं करें, तो जिन्होंने नहीं सुना है वे कैसे जानेंगे? ऐसे बहुत से लोग हो सकते हैं जो यीशु को नहीं जानते और यीशु को पंसद नहीं करते। लेकिन प्रेरितों के काम 4:12 कहता है, "किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नही, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें"।

यीशु ही एकमात्र उद्धारकर्ता है और इसलिए हमें सुसमाचार का प्रचार करने की आवश्यकता है। 2 राजा के 7वें अध्याय में चार कोढ़ियों का जीवन हमारे लिए एक चेतावनी है। पद 9, तब वे आपस में कहने लगे,"हम जो कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है। यह आन्नद के समाचार का दिन है, परन्तु हम किसी को नहीं बताते। जो हम पौ फटने तक ठहरे रहें, तो हमको दण्ड मिलेगा"। हमारे अन्दर भी यही भावना होनी चाहिए और इसलिए सुसमाचार को प्रचार करना अत्यंत महत्वपर्ण है।

2. सुसमाचार का प्रचार तत्काल करने की आवश्यकता है

हमें त्रीवता से काम करने की आवश्यकता है। मानव जाति के लिए चीजों में देरी करना स्वाभाविक है। इंसान अपनी जरूरत की चीजों को पाने के लिए जल्दबाजी करता है। लेकिन जब वह दूसरों को जरूरतमंद देखता है तो उसकी मदद करने की इच्छा कम हो जाती है। मैं अपनी बीमारी के कारण तीन महीने तक बिस्तर पर पड़ा रहा। एक दिन सुबह–सुबह परमेश्वर ने मुझे दर्शन दिया। मैंने आठ वर्षों तक परमेश्वर के लिए काम किया और अब मैं आगे बढ़ने में असमर्थ था। चिकित्सीय सलाह ने मेरे अंदर एक भय उत्पन्न कर दिया था। तब मैंने परमेश्वर से पूछा, मुझे तेरी सेवा कहाँ जारी रखनी चाहिए? मुझे सेवकाई पुनः कब शुरू करना चाहिए? मुझे कैसे करना चाहिए? इन सभी

सवालों के जवाब अलग–अलग और अद्भूत थे। परमेश्वर ने मुझसे पूछा, "मुझे बताओ, कि तुम लोगों को मरते हुए कहाँ देख सकते हो"? लोग हर जगह मरते हैं। तब परमेश्वर ने कहा, सब स्थानों पर सेवकाई करो। क्योंकि वे अब भी मर रहे हैं। तो फिर हमें तुरंत सुसमाचार का प्रचार शुरू कर देना चाहिए।

हाँ, प्रियों हमारे चारों ओर जो लोग यीशु के बिना हैं वे नरक की ओर बढ़ते ही जा रहे हैं! यदि हतने यह कहकर टाल दिया कि हम इसकी घोषणा कल कर सकते हैं तो बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो जायेगी। अमेरिका में एक युवा अभिनेत्री शांति के बिना दुष्टता का जीवन जी रही थी। एक बार उसे एक सुसमाचार सभा में भाग लेने का अवसर मिला। उसी दिन उसे प्रभु को अपना जीवन देने का बुलाहट हुई। पर उसके हृदय में चुभन महसूस हुई। उसने अगले दिन अपना जीवन यीशु को समर्पित करने का फैसला किया और जल्दी से उस सुसमाचार छोड़ दी। घर वापस आते समय वह एक दुर्घटना का शिकार हो गई और उसका वही पर उसका निधन हो गया। उसने उसी दिन जीवन समर्पित न कर अगले दिन अपना जीवन यीशु को समर्पित करने के बारे में सोचा, लेकिन उसे दूसरे दिन को देखने का अवसर ही नही मिला।

हाँ, प्रियों, आइए, आज हम अपना जीवन यीशु को समर्पित करें और आज उसके बारे में प्रचार करें! 2कुरि.6:2 को देखें, क्योंकि वह कहता है, "अपनी प्रसन्नता के समय मैंने तेरी सुन ली, और उद्धार के दिन मैं ने तेरी सहायता की"। देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है, देखो अभी वह उद्धार का दिन है। हमारे पास कल का अवसर नहीं हैं, लेकिन हमारे पास केवल आज है। चारों कोढ़ियों ने एक दूसरे की ओर देखा, फिर उन्होंने एक दूसरे से कहा, "हम जो कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है, यह आन्नद के समाचार का दिन है, परन्तु हम किसी को नहीं बताते। जो हम पौ फटने तक ठहरे रहें, तो हमको दण्ड मिलेगा, इसलिए, अब आओ हम राजा के घराने के जाकर यह बात बतला दें"। (2राजा 7:9) हम यह अच्छा निर्णय क्यों नहीं ले सकते?

3. सुसमाचार का प्रचार करने में आशीषें:

सुसमाचार का प्रचार उन सभी स्थानों पर किया जाना चाहिए जहाँ हम जाकर प्रचार कर सकते हैं। बहुत सी ऐसी जगहें है जहाँ हम नहीं जा सकतें। तो फिर हमें उनके लिए प्रार्थना करने की जरूरत है। प्रचार करना हमारा कर्तव्य है और सहयोग/सहायता करना हमारा दायित्व है। जिन लोगों ने सुसमाचार के लिए संघर्ष सहा हैं उनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं और फिलिप्पियों 4:3

इसका समर्थन करता है। फिलिप्पियों का पत्र हमें प्रभु में एक मन से रहना, सुसमाचार के लिए संघर्ष करना और सुसमाचार सेवकों के साथ मिलकर काम करना सिखाता है। परिणामस्वरूप हमारे आशीषित नाम फिलिप्पियों की पत्री में लिखे गए हैं! अतः हमें थकना नहीं चाहिए बल्कि प्रार्थना करते समय सावधान रहना चाहिए। आइये, मिलकर हम काम करें और तीव्रता/रफ्तार से काम करें। आइए, हम अपने द्वारा स्वर्ग को भर दें। स्वर्गदूत आन्नद मनायें और हम भी महान आन्नद से भर जाएँ। ■

प्रभु की स्तुति हो!
सुसमाचार क्षेत्रों का भ्रमण, फलती-फूलती सेवकाई का साक्षी बना!

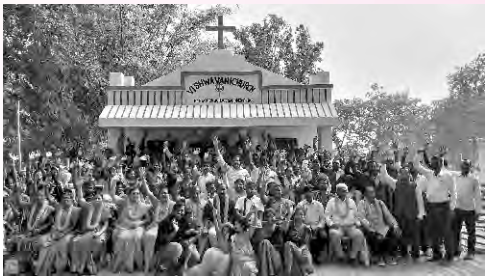

38 प्रार्थना सहयोगियों/योद्धाओं के एक समूह के रूप में, हमें डिंडीगुल और तिरूनेलवेली से ओडिशा के सेवारत गाँवों का दौरा करने का अवसर मिला। हमने 11 से 18 जनवरी तक इन सुसमाचार क्षेत्रों का भ्रमण किया। इन महत्वपूर्ण दिनों ने सेवकाई को हमारे हृदय को मजबूत किया!

जो सुसमाचार प्रचारक गाँवों में पहुँचते हैं वे बहुतायत के अनुग्रह से पूर्ण हो जाते हैं! यह पवित्र आत्मा का कार्य है कि आत्माओं और कलीसियाओं में कटनी का कार्य बढ़ रही है। श्री जॉन सोलोमन और श्रीमती हेपसीबा थिरूसेल्वम के प्रयासों से "स्कूलसाही" में स्थापित आराधना भवन को 15.01.2024 को परमेश्वर की महिमा के लिए समर्पित किया गया। सुसमाचार सेवकों के माध्यम से अपनी महिमा के लिए दुर्गम क्षेत्रों में सामथीपूर्ण रूप कार्य कर रहा है। हाल्लेलुय्याह।!

– भ्रमण समूह की ओर से – जेसुदास दुराई सिंह, समन्वयक

दुर्गम क्षेत्रों की ओर से...

हम 23.01.2024 को होस्ट ऑफ क्राइस्ट चर्च, तिरूनेलवेली में 20 सुसमाचार प्रचारकों को सेवा के लिए रेव्ह.डॉ.राजन एडवर्ड को हार्दिक बधाई देते हैं। ये सेवकगण राजस्थान, हरियाणा, गुजरात और महाराष्ट्र के गाँवों को आशीषित करने के लिए अपने कदम गाँवों में रखेंगे। हम उन बच्चों का भी अभिनंदन करते हैं जो इन सेवकों का सहयोग करते हैं।

ये कलीसियाएं और परिवारों को जो भारतीय गाँवों और सुसमाचार प्रचारकों की मासिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए खड़े हैं, उन्हें प्रभु बहुतायत की आशीष दें। *– राज्य समन्वय*

कार्यक्षेत्र के समाचार

स्तुति – प्रार्थना

यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, "मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।" (मरकुस 10:27)

जम्मू कश्मीर

परमेश्वर की स्तुति होः प्रभु यीशु के नाम में 5 लोगों का उद्धार हुआ। अफताब के परिवार को परमेश्वर के वचन द्वारा नया जीवन मिला। परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा हम कई युवा और युवतियों के मध्य परमेश्वर का वचन बाँटने में सक्षम हुये। भाई ज्ञान चंद को परमेश्वर का वचन स्पर्श करने के लिये।

प्रार्थना करेंः मनवल क्षेत्र में सुसमाचार सभा प्रारम्भ होने के लिये। इस क्षेत्र में जिन लोगों ने सुसमाचार सुना उनका उद्धार होने के लिये। लाली क्षेत्र के लोगों के हृदय में पवित्र आत्मा कार्य करने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

हिमाचल प्रदेश

परमेश्वर की स्तुति होः खोजियों की सभा के माध्यम से कई लोगों के साथ सुसमाचार बाँटा गया। बरोट जिले में सेवकाई के लिये द्वार खुला और 3 लोगों का उद्धार हुआ। क्षेत्र सर्वेक्षण के माध्यम से सेवकाई के लिये 10 गाँवों को चिन्हित किया गया। पहाड़ी और किन्नौरी जनसमूह के मध्य में सेवकाई के लिये कई युवाओं ने स्वयं को समर्पित किया।

प्रार्थना करेंः 9 लोग और उनके परिवार जिन्होंने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया, वे विश्वास में बढ़ने के लिये। कार्यकर्ता राहुल गिल जो फेफड़ों की समस्या से ग्रसित हैं। इस कार्यक्षेत्र में सेवकाई फलवंत होने के लिये। राजा का बाग क्षेत्र के विश्वासियों की आत्मिक उन्नति के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

पंजाब

परमेश्वर की स्तुति हो: विश्वासियों की संगति में कई परिवार शामिल हुये। युवाओं की संगति के माध्यम से 13 लोगों ने प्रभु यीशु के पीछे चलने का निर्णय लिया। 20 लोग पूर्णकालीन सेवकाई में शामिल होने के लिये आगे आये।

प्रार्थना करें: 26 लोग जिन्होंने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया, वे विश्वास में बढ़ने के लिये। इस क्षेत्र में चलने वाली युवाओं की सभा में शामिल होने युवाओं के हृदय में पवित्र आत्मा कार्य करने के लिये। खोजियों की सभा के माध्यम से 40 युवाओं ने अपने पापों का पश्चाताप किया, वे विश्वास में बढ़ने के लिये। कार्यकर्ता संदीप और जसपाल सिंह को उनकी बीमारी से चंगाई मिलने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

उत्तराखण्ड

परमेश्वर की स्तुति हो: इस क्षेत्र में कई लोग परमेश्वर के वचन में रूचि ले रहे हैं। खटीमा क्षेत्र के युवा कई समस्याओं के मध्य भी प्रभु के प्रेम में बढ़ रहे हैं। इस क्षेत्र में कई लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया और प्रभु की सेवा कर रहे हैं।

प्रार्थना करें: मुडेली और कंजाबाग क्षेत्र में आयोजित बाइबल अध्ययन समूह में नयी आत्माऐं शामिल होने के लिये। इस कार्यक्षेत्र में सेवकाई फलवंत होने के लिये। 5 सेवकाई केन्द्रों में सामाजिक विकास कार्य प्रारम्भ होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

हरियाणा

परमेश्वर की स्तुति हो: भाई जितेन्द्र ने नशा छोड़ दिया और उनके समस्त परिवार को शान्ति मिली। प्रभु ने भाई परमजीत को एक दुर्घटना में सिर के चोट से बचाया और उन्हें नया जीवन मिला, वह अपनी गवाही दूसरों के साथ बाँट रहे हैं। बहन आंचल को टी.बी के रोग से चंगाई मिली।

प्रार्थना करें: शाहा और कलानौर क्षेत्र में आयोजित होने वाली प्रार्थना सभाओं में प्रभु का चमत्कार होने के लिये। विमल और उनके परिवार में प्रभु की शान्ति आने के लिये। इस क्षेत्र में युवा कैंप चलने के लिये। मतेदी क्षेत्र के ग्रामीण परमेश्वर के वचन में दृढ़ होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

दिल्ली

परमेश्वर की स्तुति हो: इस क्षेत्र में आयोजित 4 खोजियों की सभा के माध्यम से हमें नए सम्पर्क प्राप्त हुये। उन विश्वासियों के लिये प्रभु की स्तुति हो, जिन्होंने सेवकाई केन्द्र के लिये आवश्यक कंप्यूटर और प्रिंटर की आवश्यकता को पूर्ण किया। रब्बान,

रीना और ज्योति को उनकी बीमारी से पूर्ण चंगाई मिली। किरण के समस्त परिवार ने स्वयं को प्रभु यीशु के लिये समर्पित किया।

प्रार्थना करें: बपतिस्मे के लिये तैयार लोगों के लिये। बाइबल अध्ययन में शामिल होने वाले लोगों की आत्मिक उन्नति के लिये। 6 स्थानों पर आयोजित आराधना समूह के माध्यम से लोग आशीषित होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

राजस्थान – बाँसवाड़ा प्रांत

परमेश्वर की स्तुति हो: बहन रतना के पति जो शराब के आदी थे, प्रभु ने उन्हें छुटकारा दिया। 45 वर्षीय बहन हलिया को प्रार्थना के माध्यम से लकवे के रोग से चंगाई मिली। केसर जो पिछले 1 वर्ष से दुष्टात्मा से ग्रसित थे, प्रभु यीशु के नाम में उन्हें छुटकारा मिला।

प्रार्थना करें: धवड़ाघाटा क्षेत्र में जिन लोगों ने परमेश्वर का वचन सुना, वे प्रभु के विश्वास में बढ़ने के लिये। अबापुरा क्षेत्र में पूर्णकालीन सेवक मिलने के लिये। काली जो पिछले डेढ़ वर्ष से बोलने में असमर्थ हैं। गलादर और अंगलियापाड़ा क्षेत्र में आराधना भवन के निर्माण के लिये जमीन के लिये आवश्यक दस्तावेज और अनुमति प्राप्त होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

राजस्थान – उदयपुर प्रांत

परमेश्वर की स्तुति हो: 13 मेवाड़ी जनसमूह के लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। अमरा के परिवार को दुष्टात्मा के बंधन से छुटकारा मिला और वे विश्वासियों की संगति में शामिल हुये। भाई शिवलाल ने सुसमाचार सुना और शराब पीना छोड़ दिया। उपलामागरा आराधना समूह में 5 लोग शामिल हुये।

प्रार्थना करें: बहम शर्मिला जो पिछले 7 वर्षों से दुष्टात्मा के चंगुल में हैं, उन्हें छुटकारा मिलने के लिये। 30 युवाओं के प्रशिक्षण के लिये, जिन्होंने पूर्णकालीन सेवकाई के लिये स्वयं को समर्पित किया। कोटरा क्षेत्र में दिखे जाने वाले अंधकार के कार्य दूर होने और यहां के आराधना समूह प्रभु में दृढ़ होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

बिहार

परमेश्वर की स्तुति हो: क्षेत्र सर्वेक्षण के माध्यम से सेवकाई के लिये 15 गाँवों को चिन्हित किया गया। असौइया गाँव में आयोजित दबोरा कैंप के माध्यम से 95 लोग लाभान्वित हुये। 208 गाँवों में आयोजित खोजियों की सभा के माध्यम से कई लोगों ने परमेश्वर के प्रेम को जाना। इस क्षेत्र में आयोजित बच्चों के कैंप के माध्यम से 380 बच्चे आशीषित हुये।

प्रार्थना करें: इस क्षेत्र में सेवकाई के लिये पूर्णकालीन सेवकों की आवश्यकता है। बपतिस्में के लिये तैयार लोगों के लिये। मुंगेर जिले में आयोजित युवा कैंप के माध्यम

से पूर्णकालीन सेवक मिलने के लिये। 17 गाँव में उचित भूमि मिलने और आराधना भवन के निर्माण के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

पश्चिम बंगाल – कूचबिहार जिला

परमेश्वर की स्तुति हो: विश्वासी बिश्नू बरैक ने सुसमाचार कार्य के लिये अपने घर का द्वार खोला, जहाँ 18 लोग एकत्रित होकर परमेश्वर का वचन सुनते हैं। सीमा भेंगरा का परिवार जिन्होंने प्रभु का वचन सुना और प्रभु यीशु की शान्ति को प्राप्त किया; वह अपनी गवाही दूसरों के साथ बाँट रहे हैं। मैदान लाइन प्रांत में 70 लोगों के साथ सुसमाचार बाँटा गया। राजेश ऑरान का परिवार सलधुरा प्रांत में शान्ति का पात्र है।

प्रार्थना करें: अजीत ऑरान जो अक्सर हृदय के दर्द से ग्रसित रहते हैं। प्रेमेरडांगा क्षेत्र में 16 लोगों ने परमेश्वर का वचन सुना, वे विश्वास में बढ़ने के लिये। उत्तरी जीतपुर गाँव में सुसमाचार के लिये द्वार खुलने के लिये। मोतीराम लाइन आराधना समूह के माध्यम से आसपास के गाँव आशीषित होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

असम

परमेश्वर की स्तुति हो: सोसलाबाड़ी क्षेत्र में आराधना समूह प्रारम्भ किया गया। 9 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। लोपोंगटोला विश्वासियों की संगति में 10 लोग शामिल हुये। 35 युवाओं ने पूर्णकालीन सेवकाई के लिये स्वयं को समर्पित किया।

प्रार्थना करें: सेवकाई के लिये नए गाँव को चिन्हित करने के लिये गोलपाड़ा और गोलाघाट क्षेत्र में क्षेत्र सर्वेक्षण निरंतर चलने के लिये। उत्तरी भौरागुड़ी क्षेत्र में आयोजित विश्वासियों के मेले के लिये। औनीबाड़ी और कुमारबाड़ी क्षेत्र में आराधना भवन के निर्माण के लिये भूमि प्राप्त होने के लिये। एकराजुली क्षेत्र के विश्वासी स्वेच्छा से सुसमाचार कार्य में शामिल होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

सिक्किम

परमेश्वर की स्तुति हो: सांग्य लेप्चा और संगीता सुब्बा का प्रभु के ज्ञान में बढ़ रहे हैं। दरप क्षेत्र के बाइबल अध्ययन समूह में कई लोग शामिल हो रहे हैं। चुंगमित लेप्चा और उनके परिवार ने प्रभु यीशु की सेवा के लिये स्वयं को समर्पित किया। बहन सीता थापा के परिवार ने अपने पापों का पश्चाताप किया और आराधना समूह में शामिल हुये।

प्रार्थना करें: 15 लोग जिन्होंने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया, उनके माध्यम से कई लोगों का उद्धार होने के लिये। बहन सुमन रसैली जो कैंसर के रोग से ग्रसित हैं, उन्हें पूर्ण चंगाई मिलने के लिये। समथार और सिदीबुंग क्षेत्र में प्रभु की आराधना प्रारम्भ होने के लिये। 5 स्थानों में आराधना भवन के निर्माण के लिये भूमि प्राप्त होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

मणिपुर

परमेश्वर की स्तुति होः 3 सेवकाई केन्द्रों में 380 परिवारों राहत सामग्री भेजने में प्रभु ने हमें सक्षम बनाया। 2 परिवार कैनौ विश्वासियों की संगति में शामिल हुये। बहन रूबीना को दुष्टात्मा के बंधन से छुटकारा मिला, वह अपनी गवाही दूसरों के साथ बाँट रही हैं।

प्रार्थना करेंः उत्लू और सबल क्षेत्र में सेवकाई के लिये द्वार खुलने के लिये। बपतिस्मे के लिये तैयार लोगों के लिये। नांगपोक और मोइरांग गाँव के लोग विश्वास में बढ़ने के लिये। इस कार्यक्षेत्र में सेवकाई फलवंत होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

त्रिपुरा

परमेश्वर की स्तुति होः 13 लोगों ने अपना नया जीवन प्रारम्भ किया। बिशू लक्ष्मी को लकवे के रोग से चंगाई मिली। 30 लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया।

प्रार्थना करेंः बपतिस्मे के लिये तैयार लोगों के लिये। कामिकाटोर पारा क्षेत्र के विश्वासियों की आत्मिक उन्नति के लिये। वारेंग कामी क्षेत्र में पूर्णकालीन सेवक मिलने के लिये। जैकचारा कामी गांव के लोगों को पीने का पानी, सड़क और बिजली प्राप्त होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

ओडिशा – कंधमाल जिला

परमेश्वर की स्तुति होः जामझिरी क्षेत्र में हमें सुसमाचार कार्य प्रारम्भ करने का अवसर प्राप्त हुआ। बारिकुम्पा गाँव में 12 लोगों के साथ बाइबल अध्ययन समूह प्रारम्भ किया गया। तिलकीपाड़ा क्षेत्र के विश्वासी आराधना भवन के निर्माण के लिये, अपनी दान दी। सेनापोडी क्षेत्र की कलीसिया में 8 परिवार शामिल हुये।

प्रार्थना करेंः बपतिस्में के लिये तैयार लोगों के लिये। 10 युवा जो कुई जनसमूह के मध्य सेवकाई के लिये आगे आए हैं। सुसमाचार सभा में शामिल होने वाले लोग विश्वास में बढ़ने के लिये। आराधना समूह में शामिल होने वाले लोगों की आत्मिक उन्नति के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

झारखण्ड

परमेश्वर की स्तुति होः 20 गाँव में सेवकाई प्रारम्भ की गयी। भाई प्रकाश मुंडा जो प्रभु के प्रेम से दूर थे, उन्होंने प्रभु के प्रेम को जाना तथा अपने पापों का पश्चाताप किया और प्रभु यीशु मसीह को स्वीकार किया।15 ऑरान और मुंडारी जनसमूह के लोगों ने मसीह में अपने नए विश्वास को स्वीकार किया। भरनो क्षेत्र में आयोजित बच्चों का कैंप के माध्यम से 130 बच्चे लाभान्वित हुए।

प्रार्थना करें: जीवन मदकी जो मानसिक रूप से बीमार हैं। ताल प्रांत को अंधकार के कार्यों से छुटकारा मिलने के लिये। परदेशिया का परिवार जो 12 वर्षों से निसंतान हैं, उन्हें बच्चे की आशीष प्राप्त होने के लिये, कृपया प्रार्थना करें।

मध्य प्रदेश

परमेश्वर की स्तुति हो: डिंडोरी प्रांत के युवा सुसमाचार सुनने में रूचि ले रहे हैं। रेवा क्षेत्र की विश्वासियों की संगति में तीन परिवार शामिल हुये। 4 परिवार बाइबल अध्ययन समूह में शामिल हुये। बहन सुनीता को 5 वर्षों के बाद प्रार्थना के माध्यम से बच्चे की आशीष मिली।

प्रार्थना करें: कार्यकर्ता परसादी लाल जो सड़क दुर्घटना के कारण चोट लगने से ग्रसित हैं, उन्हें चंगाई मिलने के लिये। वर्ष 2024 में सेवकाई के लिये गाँवों को चिन्हित करने के लिये, पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें।

विश्ववाणी समर्पण के लिए सदस्यता भेजने के लिए

A/C Name: VISHWA VANI SAMARPAN
Bank: STATE BANK OF INDIA
A/C No.: 1040 845 3024
IFSC Code: SBIN0003870
Branch: ANNANAGAR WEST, CHENNAI

Please update us with the transaction info to acknowledge it with Receipt.
Phone: 044-26869200

तब समस्याएँ - अब स्तुति

आधी रात को जब सारा नगर गहरी नींद में सो रहा था, तब हमारे घर में बड़ा रोना–धोना मच गया! दुष्टात्मा की चीख ने हमारी नींद छीन ली! पूरे वर्ष कई जानकार हमारे घर आते जाते रहे, और हमने उन पर बहुत पैसा खर्च किया, लेकिन रातों का डर कभी समाप्त नहीं हुआ।

पिछले वर्ष के दौरान, हमने सुना कि केवल यीशु मसीह के पास ही दुष्टात्माओं से सच्चा छुटकारा देने का अधिकार है। हमने बेदकुवा गाँव के सेवक भाई द्वारा प्रचारित सुसमाचार को सुना और हमने प्रार्थना करना शुरू कर दिया। यीशु के नाम पर हमारी सरल सी प्रार्थना स्वर्ग तक पहुँची। परमेश्वर ने दुष्टात्माओं को हमारी सीमाओं से बहुत दूर भगा दिया और हमें स्वतंत्र और भय मुक्त कर दिया।

आज हम शांति से आराम पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, और परमेश्वर ने यीशु की सामर्थ्य के माध्यम से हमारे हाथों के कार्यों को आशीषित किया है! हमें एक नया घर बनाने और परमेश्वर की सेवा करने की आशीष मिली है। यीशु ही हमारे घर का प्रधान है! जी हाँ, यह यीशु ही है जो सबका उद्धार करता है! *– गोविंद भाई, चिबाभाई, गुजरात*

सुसमाचार का बीज

प्रभु में प्रिय भाई बहन

हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के पवित्र व सामर्थी नाम में प्रेमी नमस्कार !

इस समर्पण पत्रिका के माध्यम से फिर एक बार परमेश्वर पिता ने अवसर दिया कि इस माह के अंक "सुसमाचार कहाँ और कब" के माध्यम से अपने विचार को रखने का मौका परमेश्वर ने दिया। मुझे पवित्रशास्त्र का वह दृष्टांत स्मरण आ रहा है, जिसमें एक बीज बोने वाला बीज बोने निकला, कुछ बीज रास्ते में गिरे तो कुछ झाड़ी में, कुछ पथरीली भूमि पर गिरे लेकिन जो अच्छी भूमि पर पड़ा वह "बहुत फल" लाया।

मेरे प्रिय मित्रों, मैं इस दृष्टान्त को आत्मिक रूप से व्यक्त करना चाहता हूँ। यह बीज क्या है? यह बीज सुसामचार का वह बीज है, जो हमारे सेवाक्षेत्रों में बोया गया है। जिसमें से उत्तर भारत के राज्यों में, जहाँ हिन्दी भाषा– भाषी लोग हैं, जैसे जम्मू काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, इन कार्यक्षेत्रों में पूर्णकालीन सुसमाचार सेवकों के माध्यम से रविवारीय आराधना संचालित है। इसके लिए आपकी प्रार्थना व सहयोग सराहनीय रहा है, सुसमाचार का यह बीज उस समय बोया गया जब उस गाँव में कोई भी कलीसिया नहीं थी।

मेरे प्रिय मित्रों, यीशु मसीह के जीवन काल में सबसे पहला सुसमाचार कार्य कहाँ–2 और कैसे फैला इस पर हम थोड़ा विचार करेंगे।

1. सुसमाचार का बीज सामरिया में बोया गया– इस वृतांत को हम यूहन्ना रचित सुसमाचार 4 अध्याय में पाते है। जहाँ पर यीशु एक कुएँ पर मार्ग का थका हुआ बैठ गया, इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को वहाँ आई। प्रभु यीशु ने उससे पानी माँगा सामरिया की रहने वाली यह स्त्री को बहुत आश्चर्य हुआ कि यहुदी होकर उस से पानी मांग रहा है, क्योंकि सामरी लोग यहुदी लोगों से कोई व्यवहार नहीं रखते थे, लेकिन फिर भी प्रभु यीशु मसीह जो कि मानव रूप में पृथ्वी पर आए, यहूदी समाज से ताल्लुक रखते थे, उस स्त्री से पानी माँगा, स्त्री ने प्रश्न किया तू यहूदी होकर मुझसे क्यों पानी मांगता है? तब यीशु मसीह ने उस स्त्री से कहा कि यदि तू जान पाती कि मैं कौन हूँ, जो तुझसे पानी माँग रहा हूँ," तो 'मैं तुझे जीवन जल' देता।

मेरे प्रियों इस स्त्री को जब यह पता चला कि यह कोई मामूली यहूदी नहीं है। यह तो जगत का उद्धारकर्ता है इसको

मेरे जीवन की बीती बातें (मेरा भूतकाल) और मेरा भविष्य सब कुछ मालूम है, तो वह दौड़ी दौड़ी अपने घड़े को वहीं कुएँ पर छोड़कर सामरिया गाँव में गयी और यह मुलाकात जो यीशु मसीह से उसकी हूई थी, सबको शुभ समाचार सुना दिया और पवित्रशास्त्र यूहन्ना 4:42 में सामरिया के गाँव में फैल गया, लोगों ने स्वयं सुसाचार गवाही दी कि अब तेरे कहने से ही विश्वास नहीं करते क्योंकि हमने आप ही मान लिया और जानते हैं कि यही सचमुच में " जगत का उद्धारकर्ता हैं।"

मेरे प्रिय भाई बहिनों सामरिया के लोगों ने सुसमाचार को अपने हृदय में ग्रहण करके सुसमाचार के गवाह बन गये, यह कैसे हुआ यह उस स्त्री की पहल करने के कारण हुआ, सामरिया गाँव में प्रभु की सच्ची आराधना की शुरूआत हो गयी, इसी प्रकार आज वर्तमान में भी विश्ववाणी सुसमाचार का यह बीज उत्तर भारत की उपजाऊ भूमि पर गिरा है। जहाँ पर सैकड़ों आत्माएँ प्रभु को अंगीकार करके सच्ची आराधना कर रहे है।

2. सुसमाचार का बीज कार्यक्षेत्रों में बोया गया – सुसमाचार का एक बीज 1995 में जम्मू काश्मीर में गिरा और अच्छी भूमि में पड़कर 2003 में यह पाकिस्तान के बोर्डर के पास पहला आराधना भवन का निर्माण हुआ, इसी प्रकार से आज कई आराधना समूह संचालित हो रही है, और वर्तमान में आराधना भवनों का भी निर्माण किया गया है, जहाँ पर कोई सोच नहीं सकता है कि यहाँ पर परमेश्वर के आराधना भवन में घंटी की गूंज सुनाई देगी। इसी बीच 2014 में एक भवन का निर्माण किया गया, अब यहाँ के विश्वासियों की सुसमाचार के पहल के कारण और परमेश्वर के पवित्रात्मा की अगुवाई में जम्मूकाश्मीर के कटरा के आसपास और कश्मीर के डोडा जिलों तक उस उद्धारकर्ता यीशु मसीह का शुभ समाचार कश्मीर की वादियों में भी गुँज रहा है, परमेश्वर पिता की महिमा हो, दूसरा सुसमाचार का बीज 2004 में उत्तराखंड के हरिद्वार और ऋषिकेश में गिरा और कई आराधना भवन का निर्माण हो गया, आज इन जगहों पर कई आराधना की गूंज सुनाई दे रही है।

प्रियों यह कैसे सम्भव हो सका? परमेश्वर के इस महान सुसमाचार के कार्य में परमेश्वर का जो अनुग्रह हमें बहुतायत से प्राप्त है, हमने समय को बहुमूल्य जानकर बीज को बोना जारी रखा है। आज उत्तर भारत के 12 राज्यों के विभिन्न स्थानों में आराधना की गुंज सुनाई दे रही है, और दूसरा यह कि विश्वास की प्रार्थनाएँ व दान सहयोग के द्वारा यह सम्भव हो सका है। हमारी एक पहल के द्वारा गाँव–गाँव में सुसमाचार का यह बीज सही समय पर अवश्य अंकुरित हो रहा है और एक दिन आराधना का वृक्ष तैयार होगा यही हमारी आशा है।

यद्यपि सुसमाचार की इस सेवा में काफी चुनौतियाँ हैं। फिर भी प्रभु का आत्मा अपने लोगों को प्रेरित कर रहा है और वे अपने विश्वास का प्रमाण दे रहे हैं।

3. सुसमाचार का एक बीज जेल खाने में गिरा – वर्तमान में हमारे बहुत से कार्यक्षेत्रों में बहुत सी गवाहियाँ हैं, वे जेल में डाले में गये वहाँ पर भी उन्होंने सुसमाचार का बीज बोना जारी रखा है, और अपनी जीवित साक्षी को कायम रखा। अभी हाल ही में हमारे भाईयों को डेढ़ माह तक कारागार में रहना पड़ा। एक भाई तो अपनी पत्नी व बच्चे के साथ जेल में चले गये, उनकी यह गवाही है कि वहाँ पर वो उन बन्दी लोगों के मध्य प्रार्थना करना और सुसमाचार को सुनाना जारी रखा, डेढ़ महीने के बाद उन्हें जेल खाने से रिहा किया गया गया जेल खाने से रिहा किया गया तो जेल खाने के बन्दी बहिनों ने उनको आँसुओं के साथ विदा किया और विनती कि हमारी रिहाई के लिए भी प्रार्थना करना कि हम भी जल्दी से रिहा हो सके, और सुसमाचार की सच्चाई को और भी अच्छे से यीशु मसीह को जान सकें। यह हमारे कार्यकर्ता बहन पूनम की गवाही है कि हमने जेल में अपनी यातनाओं की चिन्ता न करते हुए जेल खाने में भी सुसमाचार व गवाही का बीज बोया है। इस तरह की सूचना समाचार सुनकर हमें आत्मा ने प्रेरित किया है हमें प्रभु का कार्य हर सम विषम परिस्थितियों में सुनाते रहना है।

यह सुसमाचार का बीज जब कैद खाने में बोया गया है तो हमें पूर्ण विश्वास है कि यह एक दिन अंकुरित होकर एक बड़े रूप में शुभ समाचार सुनानेवालियों की बड़ी सेना तैयार हो जायेंगी (भजन 68:11) यह हम सबकी प्रार्थना व लगन ऐसी ही होनी चाहिए।

इसलिए मेरे प्रिय भाई बहिनों इस लेख का समापन करने से पहले मैं यह आग्रह प्रभु के अनुग्रह में होकर करता हूँ कि आप भी सुसामचार का यह बीज प्रार्थना व दान का सहयोग देकर सुसमाचार को उन गाँवों में जहाँ पर परमेश्वर का आत्मा कार्य कर रहा है। हमारे साथ सुसमाचार के क्षेत्र में अपने विश्वास का कदम आप बढ़ाकर इस सुसमाचार की कटनी में सहभागी हों। क्योंकि यदि हम ढीले न हो तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे। (गला.:8–10)। *– रेव्ह. डी.एस. राणा*

वर्तमान समाचार

जनवरी 2024 में तेलंगाना पुलिस द्वारा आयोजित एक महीने तक चलने वाले कार्यक्रम "ऑपरेशन स्माइल–एक्स" के माध्यम से पूरे तेलंगाना राज्य से कुल 3479 बाल मजदूरों को बचाया गया। राज्य पुलिस लापता और तस्करी के शिकार बच्चों का पता लगाने और उन्हें बचाने के लिए हर साल जनवरी में यह अभियान चलाती है। एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, अधिकारियों ने बच्चों को असुरक्षित परिस्थितियों में पाया। प्यारे प्रभु, बचाए गए बच्चों के लिए हम आपकी स्तुति करते हैं। *हे प्रभु, हमारे देश में खोए हुए सभी बच्चों को ढूंढ़नें में हमारी सहायता करें।*

सर्वाइकल कैंसर भारत में महिलाओं को प्रभावित करने वाला दूसरा सबसे आम कैंसर है। हर साल 1,20,000 से अधिक महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर का पता चलता है और 75,000 से अधिक इस बीमारी से मर जाती है। भारत में महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर दूसरा सबसे अधिक होने वाला कैंसर है। भारत में 15 वर्ष और उससे अधिक उम्र की 50 करोड़ से अधिक महिलाएं हैं जिन्हें सर्वाइकल कैंसर का खतरा है। *प्रभु आपने जो हमारी चंगाई के लिए कोड़ो की मार सही, उन लोगों पर दया करें जो इस कैंसर से पीड़ित हैं।*

उच्च शिक्षा में कुल नामांकन 2021–22 में लगभग 4.33 करोड़ हो गया है, जिसमें 2014–15 के बाद से करीबन 91 लाख से अधिक छात्रों की वृद्धि है। यह पिछले कुछ वर्षों में भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के तेजी से विस्तार को व्यक्त करता है। 2014–15 से पी.एच.डी नामांकन 2.12 प्रतिशत से बढ़कर 81.2 लाख हो गया है। इसी अवधि में महिला पी.एच.डी नामांकन भी दोगुना हो गया है, जो शोध डिग्री में अधिक लैंगिक समानता को प्रकट करता है। *हे परमेश्वर, शिक्षकों के प्रयास सफल हों और हम प्रार्थना करते हैं कि छात्र हमारे देश में उचित स्थान प्राप्त करें।*

सेवा के लिए सम्पर्क करें

JAMMU: Vishwa Vani, C/o Ashirwad Bhawan, H.NO. 165, Lane-2, Christian Colony, New Plot, Jammu-180005. Mobile No- 9469289692, 9419287712.

PUNJAB/HP: Vishwa Vani, C/o Dr. Sony Astha Dental lab, 2-A, Ward No-13, Dev Nagari, Near Hossana Church, Behind Dr. Rajpal Hospital Camini, Pathankot, Punjab- 145001, Mobile No-9915651260.

UTTRAKHAND: Vishwa Vani, Vill. Gorakhpur Aarkediya Grant, Christian Colony Near Methodist Church Water Tank, P.o Badowala Prem Nagar, District Dehradun, Uttarakhand - 248007, Mobile: 9557968104.

DELHI: Vishwa Vani, F-11, First Floor, Vishwakarma Colony, M.B. Road, New Delhi - 110044, Ph: 0129- 4838657; Mobile No: 9910762447.

UTTAR PRADESH: Vishwa Vani, Raj Villa 11/32/1 Indira Nagar, Lucknow, Uttar Pradesh - 226016 Mobile No- 8687951286.

UTTAR PRADESH: Vishwa Vani, C/o Vivek Singh (Advocate), H.No-D-65/423, C-8, Rana Nagar Colony, Near Scion Public School, Lagaratara, Varanasi, Uttar Pradesh-221002, Mobile No: 8115123799

RAJASTHAN: Vishwa Vani, Mission Compound, Banswara, Rajasthan - 327001, Mobile No- 9414725164.

RAJASTHAN: Vishwa Vani, C/o Abhram Ninama, 29, Jaldarshan Complex, Sanjay Park, Rani Road, Udaipur, Rajasthan - 313001, Mobile No-9602385024.

MADHYA PRADESH: Vishwa Vani, 2/6-A, Sarvajan Colony, Akbarpur Nayapura, Kolar Road,Bhopal, Madhya Pradesh - 462042, Mobile No - 9770252588.

MADHYA PRADESH: Vishwa Vani, C/o Mrs. Neena singh, 146 M.C.I. Colony, Near Anchal Vihar Katanga, Jabalpur, Madhya Pradesh - 482001, Mobile: 7722916665.

BIHAR: Vishwa Vani, CA/59, Near Malahi Pakri Chowk, PC Colony, Kankarbagh, Patna, Bihar-800020, Mobile No- 9110966419; 9337652667.

JHARKHAND: Vishwa Vani, C/o Kachhap Niwas, Bodra Lane Nayatoli. H.B.Road,Ranchi, Jharkhand - 834001. Mobile No-9431927472; 7909013933.

CHATTISGARH: Vishwa Vani, H.No. D- 4, Shatabadi Nagar, Telibandha, Post- Ravi Gram, Raipur 492006, Chhattisgarh, Mobile No. 9826452343, 7879125657.

CHATTISGARH: Vishwa Vani, Thomson Villa, H.NO-58, Ward No-17, Mission Road Bhojpur, Champa, Dist-Janjgir-Champa, Chhattisgarh - 495671, Mobile No:7987020083; 9926176754.

यीशु मेरा चंगा करने वाला है...

हम शेपुआम्बा गाँव से हैं और हमारा परिवार खेती पर निर्भर है। मेरे पैर जो खेत में कड़ी मेहनत करते थे, अचानक अपना कार्य जारी रखने में असफल हो गए। दर्द बढ़ने लगा और आमदनी घट गई! हम कई राहत केन्द्रों में चंगाई के लिए गए। लेकिन दर्द कम नहीं हुआ। सुसमाचार सेवक सोनजी भाई आर.पवार ने कहा कि यीशु नाम का एक व्यक्ति है, जिसने क्रूस पर मानव जाति की बीमारी और दर्द को दूर कर दिया। उसने मुझे यीशु से परिचय कराया और कहा की उसके कोड़े खाने से हम चंगे होते हैं। मुझे लगा कि यह मेरे लिए सुसंदेश था! मैंने सत्य पर विश्वास करना शुरू कर दिया, अपने जीवन में पहली बार, मैंने सुसमाचार सेवक के साथ यीशु के नाम से प्रार्थना करना शुरू कर किया, अतंतः मुझे यीशु में नया जीवन और सामर्थ प्राप्त हुई। मेरे पैरों में पुनः बल आ गया और मेरे हृदय में अब केवल यीशु मसीह ही है और अब मेरा स्वास्थ्य हर दिन बहुत अच्छा रहता है। प्रभु की स्तुति हो!

— हीरूबेन गवित, गुजरात।

यीशु हमारा जीवन है

मैं लालच और भौतिकवाद में फंसने के कारण कर्ज से दब गया था। मैं अपना कर्ज चुकाने में असमर्थ था। मेरे ही प्रयास मुझे और अधिक गहरे गड्ढे में खींचते चले गये। मेरे शरीर में शक्ति थी और मैंने अपने प्रयत्नों से धन कमाया, लेकिन मुझे घंमड से मुक्ति नहीं मिली। मैंने अपना व्यवसाय सुसमाचार प्रचारक द्वारा परमेश्वर के वचन से बताए गए तरीकों से शुरू किया। मैं सच्चाई, ईमानदारी, प्रेम और मेहनत की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा और धीरे–धीरे कर्ज से बाहर आ गया। मैं "उसके हाथों के काम सफल होंगे" पद को अपने जीवन में अनुभव करने में सक्षम था। अब हमारा परिवार धन्य और आशीषित और यह नदियों के किनारे लगाए गए पेड़ की तरह हो गया है। यीशु मसीह के जीवित वचन में उद्धार करने की शक्ति है, इसमे उन सभी को सक्षम करने की सामर्थ्य है जो उसका अनुसरण करते हैं। जिन लोगों ने इन्हें अनुभव किया और समझा, वे निराशा से नहीं बल्कि भविष्य के विकास के लिए सुअवसरों से भर जाएंगे! *— उमेश कुमार, उत्तर प्रदेश।*

प्रभु हमारा उद्धारकर्ता है

चालीस वर्ष की होने पर भी मेरे जीवन में शांति नहीं मिली! मुझे हर वर्ष कुछ अनुष्ठान करने पड़ते थे और कई जानकारों के पास जाता था हर महीने यात्राएं करनी पड़ती थीं। लेकिन वे यात्राएं फलवंत नहीं थीं। मेरी समस्याओं ने मेरे परिवारीक जीवन को प्रभावित करना शुरू कर दिया और मैं समाधान के लिए तरसने लगा। मुझे स्वर्ग से मिलने वाली सहायता और यीशु के बारे में सुनने का अवसर मिला, जिसे हमारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था। हमें अपने लम्बी प्रतीक्षा वाले प्रश्नों का उत्तर भोजपुरी सुसमाचार सेवक के माध्यम से मिला। हाँ, हमें वचन द्वारा स्पष्ट कर दिया गया कि उद्धार और छुटकारा केवल उस एकमात्र यीशु के द्वारा ही है! अब हम यीशु के पास आ गये हैं और हम उसे लगातार और अधिक जान रहे हैं! अब हमारे पास पापों की क्षमा, मुक्ति और वह शांति है जो हमारा हृदय उसकी उपस्थिति में चाहता है। हम सुसमाचार सेवक भाई को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने हमें यह बहुमूल्य सत्य/सच्चाई बताया। प्रभु की स्तुति हो!

— कुंदन, उत्तर प्रदेश।

RNI REGD. NO. RN. 45019/89 | POSTAL REGD. NO. HQ/SD/180/2024-2026 - HINDI | DATE OF PUBLICATION 22.03.2024
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT - PMG/TS/HQR/SC-02/WPP/2024-2026
Return Requested: VISHWAVANI SAMARPAN
1-10-28/247, Anandapuram,
ECIL Post, Hyderabad-500062.

NATIONAL TAMIL BELIEVERS CAMP, DHYANA NILAYAM, HYDERABAD - 14-16, JAN. 2024

SCHOOLSAHI, ODISHA - 15.01.2024

SOINKHOLA PARA, TRIPURA - 28.01.24

HEMSUKLAPARA, TRIPURA - 15.01.24

KUNDABHANGA, ODISHA - 29.01.24

GODEVALASA, A.P. - 27.01.24

NORTH INDIA COORDINATORS CAMP, BHOPAL - 28-31, JAN. 2024

VISHWA VANI SAMARPAN – HINDI LANGUAGE
Printed and Published by P. Selvaraj on behalf of VISHWA VANI, a registered society (Regn. No.17871 of 1987) and printed at CAXTON Offset Pvt. Ltd., 11-5-416/3, Red Hills, HYD-04. and published at 1-10-28/247, Anandapuram, ECIL Post, HYD-62. **POSTING DATE: 25.03.2024**. EDITOR: P. SELVARAJ